वर्ष 39 अंक : 4 3.8.2016 बुधवार (जुलाई-अगस्त) वार्षिक शुल्क : ₹111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

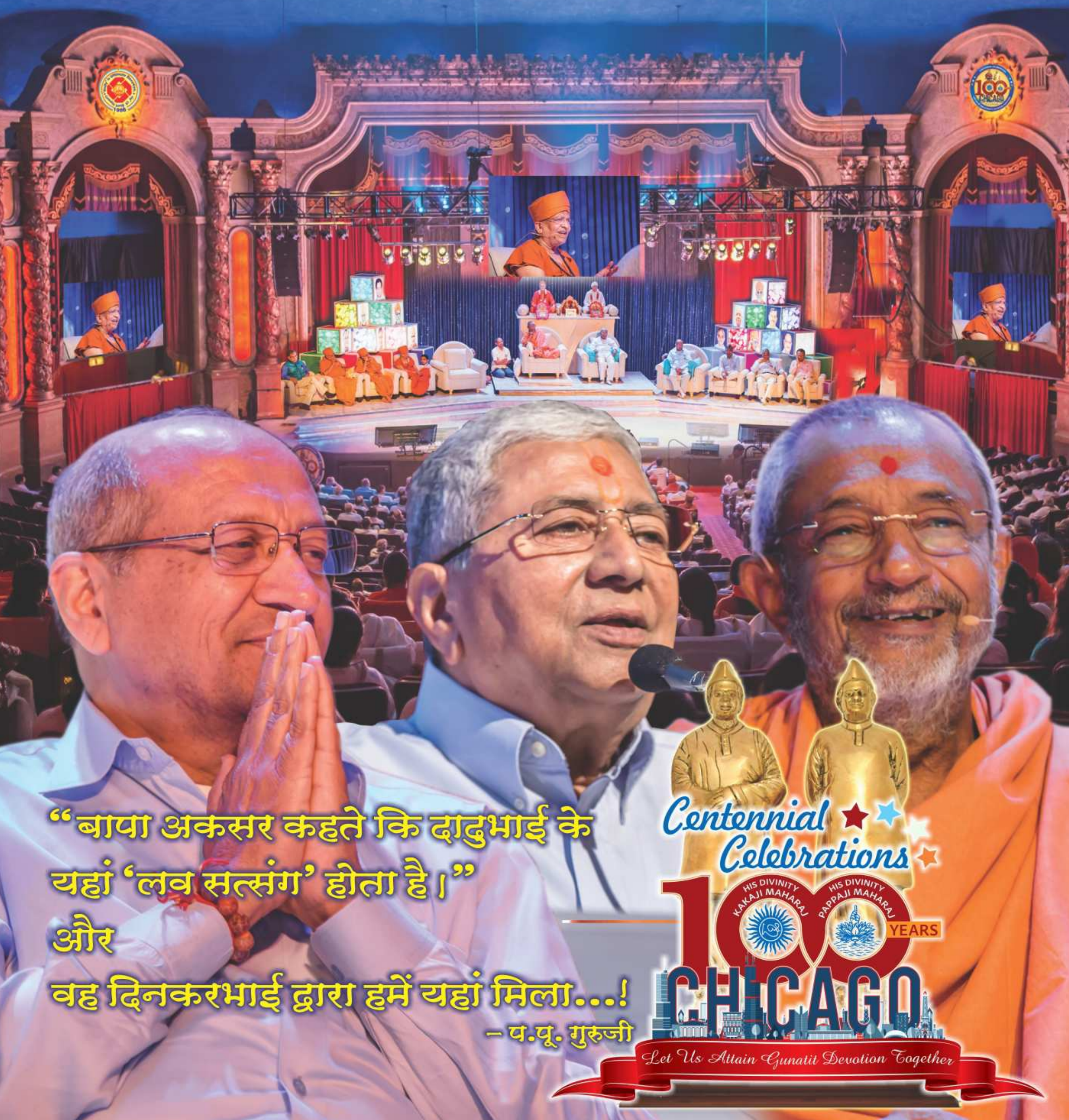

"बापा अकसर कहते कि दादुभाई के यहां 'लव सत्संग' होता है।"
और
वह दिनकरभाई द्वारा हमें यहां मिला...!

– प.पू. गुरुजी

महापूजा का माहौल ऐसा बना कि बिल गेट्स जैसे–

करोड़ डॉलर देने के लिए बुलाएं, तब भी जाने को कोई इच्छुक न होगा।

-प.पू. दिनकरभाई

गुरुहरि पप्पाजी – शताब्दी वर्ष पर कोटि - कोटि नमन...

अहो ! ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज द्वारा बख़्शिश में मिली दिव्य विभूति **गुरुहरि पप्पाजी का शताब्दी वर्ष – पहली सितंबर, 2016 !** अत्यंत हर्ष का अवसर है कि गुरुहरि पप्पाजी जहां सदैव विराजमान हैं, ऐसे तीर्थधाम **'विद्यानगर'** में **11, 12** और **13 नवंबर 2016** के पावन दिनों **गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी के साथ 'दिव्य बंधुजोड़ी शताब्दी'** का एक चरण पूरा गुणातीत समाज मिलकर मनाएगा, और तब सभी इनके द्वारा मिली ज्ञान की सौगात को व्यापक बना कर मिलजुल कर आनंद करेंगे।

जैसे मनुष्य का श्वास प्राणवायु के आधार पर सुचारु रूप से चलता है, उसी प्रकार आश्रितों का व्यावहारिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन प्रभुधारक सच्चे संत के संबंध से सही दिशा प्राप्त करता है। ब्रह्मस्वरूप काकाजी के साथ एकत्वभाव से इस ब्रह्मनियंत्रित गुणातीत समाज को अस्तित्व व पहचान देकर पोसते **गुरुहरि पप्पाजी अपने आश्रितों के लिए प्राणवायु के समान हैं।** ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का वचन ही उनके जीवन के लिए प्रवृत्ति और निवृत्ति थी। स्वयं को 'योगी का प्रकाश' मान कर जीते गुरुहरि पप्पाजी ने अपनी गुणातीत अस्मिता से, संबंध में आए भक्तों को साधना मार्ग पर चलाया। 'योगी' को पल-पल धारे होने के बावजूद, एक साधक का जीवन जीकर, अन्यों को वैसा जीने के लिए प्रेरित किया। सच कहें तो अक्षरधाम से आई विरल विभूति गुरुहरि पप्पाजी का वर्णन लेखनी, वाणी या विचार द्वारा जितना करते हैं, वे उससे कोसों आगे ही नज़र आते हैं। लेकिन, उनकी यह अनहद् कृपा कही जाए कि स्वयं सत्पुरुष का सेवन करके, स्वानुभव से उन्होंने प्रसंगोपात जो सूत्रात्मक ज्ञान दिया है, वह सहजता से जगत में रहते हुए, आध्यात्मिक जीवन जीना सिखाता है। तो, आइए **'गुणातीत ज्योत'** पत्रिका के सौजन्य से **ब्रह्मस्वरुप पप्पाजी** के निम्न **100 प्रेरणा सूत्रों** को अपनाने का संकल्प करके शताब्दी वंदना करें...

1. भगवान को नाराज़ होने का अधिकार ही नहीं है; यूं साधक को मनमानी करने का अधिकार नहीं।
2. 'अमहिमा की बात ही नहीं' इतनी शिस्त रखेंगे, तो सत्संग यानि सत्पुरुष प्रधान हो जाएँगे।
3. भगवान को किसी भी प्रकार का अहंकार पसंद नहीं।
4. हम किसी का भी तिरस्कार करें, यह हमारा ही दोष है।
5. जिसे अंतर में महिमा नहीं होगी, उसे देह से कसनी और थकान महसूस होती है।
6. बिजली जैसे संत की यथार्थ महिमा समझने के लिए उनके संत का सेवन करना।
7. भगवान के भक्तों का मूल्यांकन उनकी बाह्य प्रकृति देख कर कभी नहीं करना।
8. जब तक स्पष्ट अनुवृत्ति समझ में न आए, 'लीला' न मानी जाए, तब तक गुरु जो और जैसा कहें किया करना।
9. देहभाव टलता जाए, यही है प्रभु 'प्रत्यक्ष' मिलने का फल।
10. अपने से उच्च कक्षा वाले के साथ मैत्री करनी।

11. स्वरूपनिष्ठा यदि पक्की हो, तो उलझन/बेचैनी आए ही नहीं।
12. सत्पुरुष जो करें, उसे हम स्वीकारें; उनसे बहस न करें-हठ न करें।
13. यदि निष्ठा अटल रखेंगे, तो भगवत्स्वरूप संत की चाहत मिलेगी।
14. जो झुकेगा, वो नारायण को भाएगा।
15. जैसे-जैसे बड़प्पन आता जाएगा, वैसे-वैसे नम्रता बढ़ती जाएगी।
16. त्याग-वैराग्य कम होगा, तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन भगवान और गुरु जो मिले हैं, उनके प्रति जबरदस्त निर्दोषबुद्धि रखना।
17. 'आज्ञास्वरूप' में जितना वफ़ादार रहेंगे, उपासना में उतनी 'अनुवृत्ति' प्रगटेगी।
18. सत्पुरुष के चरणारविंद में अखंड प्रीति रखेंगे, तो काल, कर्म, माया छू नहीं पाएंगे।
19. प्रसंग बनने पर, गुस्सा होने के बजाय, तटस्थ होना।
20. भजन का आसरा जैसा दुनिया में अन्य कोई आसरा नहीं है।
21. जिससे गुण प्राप्त करने हों, उसके पास रांक बन कर जीना पड़े।
22. भगवान के साथ प्रार्थना से लड़ना, ज्ञान से नहीं।
23. तीर्थक्षेत्र में खड़े किए गए प्रारब्ध, वज्रलेप बनते हैं।
24. देहभाव दूर करें, तो ब्रह्मभाव आता है।
25. प्रसंग लाने का कार्य गुरु का है और तब साथ देना हमारा काम है।
26. भगवत्स्वरूप संत के संबंध वाले में विपरीतभाव आया, वो हम 'विषय' में बंध गए।
27. हमारे अहंता-ममतारहित होते ही, भगवान हम में काम करने लगेंगे।
28. अहंता से काम करने के बजाय, भगवान को करने दें, तो सभी दु:खों का अंत आ जाए।
29. दिव्यभाव रखेंगे, तो भीतर में आनंद बढ़ेगा और मनुष्यभाव लेंगे तो बेचैनी बढ़ेगी।
30. इंद्रियाँ, अंतःकरण और अपना कौशल्य यदि भगवान के काम में लगाएंगे, तो वे दिव्य बन जाएंगे।
31. अर्धज्ञान परेशान करता है, पूर्ण ज्ञान मस्ती लाता है।
32. व्यक्ति को न पकड़ कर, उसके आदर्श को पकड़ो।
33. अन्य से आग्रह रखेंगे, तो विग्रह खड़ा होगा ही।
34. 'अभिमान और आत्मसंतोष'–जीवन में सबसे घटिया विघ्न हैं।
35. प्रभु से अल्प संबंध वाले का भी दोष न देखें, यही हमारा पतिव्रताभाव है।
36. बड़े पुरुष के वचन हुंडी में राशि जैसे हैं।
37. सेवा करने के बावजूद भी यदि बाह्यदृष्टि से ही वर्तेंगे, तो सत्संग से बाहर हो जाएंगे।
38. श्रद्धा से करी हमारी प्रत्येक अरजी, भगवान जरूर सुनते हैं।
39. आज्ञा देते हुए गुरु को हिचक न हो, तब जानना कि हम उनसे जुड़े हैं।
40. प्रभु से वफ़ादारी रख कर यदि हम जिएंगे, तो सुख-चैन से आगे जाएंगे।

BJSM-2017 125 80 50 DELHI

41. प्रत्यक्ष मूर्ति को धारेंगे, तो 'योग' और 'सांख्य' दोनों सिद्ध हो जाएंगे।
42. प्रभु में वृत्ति रख कर संकल्प, भाव और क्रिया करेंगे, तो सब कुछ समान हो जाएगा।
ग.म. 13, ग.अत्यं. 11
43. गुरु 'करें' वैसा नहीं, लेकिन गुरु 'कहें', वैसा करना।
44. जिसे अपने जीव का कल्याण करना हो, वह किसी के प्रति भी 'मनुष्यभाव' न लाए।
45. 'वचन' (आज्ञा) के मुताबिक जिएंगे, तो 'उपशम ऐश्वर्य' आ जाएगा।
46. जहां हमारा मन, वहां हम हैं।
47. 'गरजु' बन कर, 'अहोहोभाव' से एवं 'यज्ञ की भावना' से की हुई सेवा ही 'तत्काल' फल देती है।
48. भगवत्स्वरूप संत (विभूति) जो कहें, उसकी 'हाँ' ही कर देना–यही श्रेष्ठ अक्लमंदी है।
49. भगवान से (ब्राह्मीशक्ति से) कार्य कराते हो जाएं, वो हमारा 'सत्संग' हो गया।
50. हमारे सत्संग का कोई क़ायज़ा नहीं है, लेकिन किसी का दोष न देखें तो ही 'प्राप्ति' होगी।
51. अपने और अन्यों के गुण-दोष का चिंतन छोड़ कर, एक प्रभु का ही चिंतन किया करो।
52. आसरे में कसर होगी, तभी परेशानी-विक्षेप आता है।
53. स्वयं द्वारा किया 'स्वाध्याय' भीतर का रुपांतर करेगा।
54. जिसका भी चिंतन करेंगे, वह आने वाले पल का प्रारब्ध बनेगा; अतः भगवान का ही चिंतन करना।
55. वफ़ादारी रखेंगे तो भगवान अपना कार्य करेंगे ही।
56. स्वयं को हुए अनुभवों की जुगाली करना, इससे भगवान में श्रद्धा बढ़ती जाएगी।
57. प्रत्यक्ष स्वरूप से चिपके रह कर, वे जो कहें वैसा किया करना।
58. हम अखंड जपयज्ञ किया करें, तो हमारा मन तर्क-वितर्क नहीं करेगा।
59. हम मुक्तों के दास बनें, तभी भगवान हमारे दास बनते हैं।
60. प्रभु हमारे दोष को नहीं गिनते, पर कपट को नहीं चलाते।
61. माहात्म्ययुक्त सेवा से अहंकार पिघल जाता है।
62. प्राप्ति का आनंद लेना, पूर्णता का नहीं।
63. जैसा संग करोगे, वैसी प्राप्ति होगी।
64. सेवा करते हुए दूसरों के दोष-स्वभाव को देखा करेंगे, तो प्राप्ति नहीं होगी।
65. भजन करते हुए क्रिया करेंगे, तो क्रिया में बंधे नहीं जाओगे।
66. आध्यात्मिक दृष्टि से–जो हारा, वो जीता।
67. भूल का बचाव न करें, परिताप होना चाहिए।
68. गुरु के पास हम कितना और कैसा समर्पण करते हैं, वह सत्संग किए की परखनली है।
69. कड़ी कसौटी में से गुज़रेंगे, तभी शुद्ध कंचन बन कर बाहर आएंगे।
70. अंतर में ठंडक और शुभ संकल्प रहें, वही प्रसन्नता की निशानी है।

71. मेरे मालिक का धारा हुआ ही होता है, ऐसा मान कर आनंद में रहना।
72. प्रभु के संबंध वाले किसी का बुरा नहीं चाहना – इतना नियम रखना है।
73. जहां-तहां, ज्यों-त्यों, जैसा-वैसा चलाना सीख लें – इसे देह आड़े नहीं आई माना जाए।
74. प्रभु हमारे साथ ही हैं, हाज़िर ही हैं – यूं मान कर सभी क्रिया करें।
75. 'मान' रखेंगे, तो भगवान की नज़र कड़ी होगी और अंतर में जलन होगी।
76. भगवान को छोड़ कर, और कहीं भी लय हों, उसे दोष कहा जाए।
77. भगवान को धार कर विचार, वाणी, वर्तन करेंगे, तो भगवान की शक्ति अपने आप कार्य कर जाएगी।
78. भगवान से संबंध बिना का जो जीव में घुस जाए, वह जन्म-मरण का चक्कर खड़ा करता है।
79. वासना ख़तम होने पर, जीव दिव्य बन जाता है।
80. राग-द्वेष रहित का जीवन, 'ब्रह्म' का गुण है।
81. नो हाऊज़ एण्ड व्हायज़ – इसे दिव्य माना कहा जाए।
82. प्रयत्न से सुख पाने और अनुभव करने की बजाय, जो सुख मिला है उसे भोगने लगो।
83. आध्यात्मिकता में लौकिक बड़प्पन काम नहीं आता।
84. सत्पुरुष की स्मृति करोगे, तो आनंद रहेगा।
85. समकक्षा के मुक्तों में से कुछ सूचन आए, तो उसे स्वीकारना।
86. रांकभाव होगा, तो अखंड स्मृति और आनंद रहेगा।
87. भगवान भजने में जो आड़े आता हो, उसका संग नहीं रखना।
88. हम 'कृपा' से आए हैं – यह कभी न भूलना।
89. गुरु के पास गुस्सा-टंटा कर ही नहीं सकते।
90. सभी बड़े और पूज्य हैं, लेकिन सेवन सिर्फ गुरुहरि और गुरु का करें।
91. जीवन में किसी से तुलना नहीं करनी, लेकिन सतत जाग्रतता रखनी।
92. अन्य का गुण ग्रहण करने के लिए आंतरिक रांकभाव रखना पड़ता है।
93. मन को प्रफुल्लित रखना – बड़ी सेवा है।
94. कभी भी मन का भरोसा नहीं करना।
95. जैसा दूसरे को समझा देने का आग्रह रखते हैं, वैसा खुद समझने का रखें, तो कुछ बाकी न रहे।
96. मन का रूख बन जाए, तो कसनी भक्तिरूप लगेगी।
97. सुहृद्भाव रखना, भगवान का आसरा रखना और किसी की भी बुराई नहीं करनी।
98. जिसे महिमा हो, उसे भगवान और भक्तों के प्रति विपरीतभाव आए ही नहीं।
99. जिस समय भगवान की जैसी रीति हो, उसमें ओत-प्रोत हो जाना।
100. भगवान के भक्त को लौकिक मनोरथ छोड़ कर अलौकिक मनोरथ करना चाहिए।

❀❀❀

BJSM-2017 125 80 50 DELHI

बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव–शिकागो की दिव्य स्मृतियाँ
एवं
प.पू. गुरुजी के संग अमेरिका–कनाडा की तीर्थयात्रा...

''काकाजी, साहेब दादा और हर्षदभाई भट्ट 1973 में अमेरिका पधारे थे, तब से हमारी प्रार्थना-भावना थी ही कि गुरुजी, उनका मंडल और समाज अमेरिका पधारें... 1973 से आज–43 वर्ष हो गए हैं – 43 वरस थया छे। इस वर्ष हम सबके सद्भाग्य से गुरुजी और उनका 100 से भी ऊपर का भक्त मंडल और पवई से भी करीब 100 हरिभक्तों का मंडल वहाँ आने के लिए तैयार है... 43 साल के बाद गुरुजी पहली बार वहाँ आने वाले हैं...''

अबकी बार 13 मार्च को प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व पर **प.पू. दिनकरभाई** द्वारा व्यक्त की गई उपरोक्त भावना प.पू. गुरुजी के प्रति उनकी अद्भुत महिमा का दर्शन कराती है। वाकई, प.पू. दिनकरभाई एवं शिकागो के मुक्त समाज की ऐसी भावना और प्रेम के वश ही, प.पू. गुरुजी पहली बार अमेरिका जाने के लिए राज़ी हुए। **प.पू. गुरुजी** के ही शब्दों में–

भारत छोड़ कर कहीं जाने की बात पर मुझे मानो बुखार आ जाता है। पर, सिर्फ और सिर्फ दिनकरभाई के कारण एवं टु ऑनर काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी–मैंने अमेरिका जाने का मन बना लिया।

आत्मीयता के वश शिकागो में सेवा हेतु **पू. आशिष, पू. शैलेषभाई, पू. मिलनभाई, पू. प्रणव एवं पू. सनी भास्कर 25 जून** की मध्यरात्रि फ्लाइट से शिकागो के लिए रवाना हुए। इसी प्रकार, **पू. प्रभाकरजी** जो दो महीने पहले ही अपने बेटे पू. अर्पित के पास गए थे वे, और अमेरिका में पढ़ाई करते दिल्ली मंदिर के खूब निजी पू. प्रमीतभाई संघवी के बेटे **पू. ईक्षेण्य** भी सेवा के लिए शिकागो पहुँचे।

दिल्ली मंदिर में **2 जून – गुरुवर्य योगीजी महाराज** की **124वीं प्रागट्य तिथि** एवं **प.पू. गुरुजी की 55वीं भागवती दीक्षा तिथि** के साथ ही, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का 98वां प्राकट्य पर्व** स्थानिक रूप में मनाया। **7 जून** की सायं भजन संध्या में 'कल्पवृक्ष' हॉल में संतों-मुक्तों का विदाई समारोह हुआ और... अगले दिन **8 जून** की देर सायं करीब 8:00 बजे **प.पू. गुरुजी**, अपने **डार्लिंग नक्षु** सहित मंदिर के सभी संतों, सांकरदा के **पू. गुरुजी (पू. निष्कामजीवनस्वामिजी)**, पप्पाजी फार्म के **पू. आचार्यस्वामिजी** एवं **प.पू. दीदी** व अक्षरज्योति की दस बहनों तथा दिल्ली–अमदावाद के करीब 65 हरिभक्तों के साथ दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटर्नेशनल एयरपोर्ट T3 पर जाने के लिए निकले।

विद्यानगर से प.पू. ज्योति बहन शिकागो जाने वाली थीं, लेकिन अकस्मात् उनकी तबीयत नासाज़ हो जाने के कारण उनका जाना रद्द हुआ। दूसरी ओर – लंदन से प.पू. देवी बहन भी शिकागो जाने वाली थीं, लेकिन अचानक पैर फिसल जाने से वे भी नहीं जा पाईं। सो, सभी की ओर से, प.पू. ज्योति बहन के वचन से, **प.पू. हंसा दीदी** ने जाने का तै किया। हर्ष की बात थी कि प.पू. गुरुजी और मुक्त जिस फ्लाइट में जाने वाले थे, उसी में शामिल होने के लिए विद्यानगर से प.पू. हंसा दीदी भी दिल्ली एयरपोर्ट पहुँची। इसी प्रकार, मुंबई

से **पू. ओ.पी. अग्रवालजी**, **सेठ पू. अनिलभाई माणेक**, **पू. विनोदभाई शाह** एवं **पू. रमेशभाई त्रिवेदी** भी सपरिवार कनेक्टेड फ्लाईट से दिल्ली एयरपोर्ट पहुँचे। यूं, 9 जून की तड़के 2:20 पर दिल्ली से AI 127 में सभी शिकागो के लिए रवाना हुए।

करीब साढ़े पंद्रह घंटे का सफ़र तय करके, वहां की 9 जून के लोकल समय सुबह करीब 6:45 बजे, **शिकागो** के 'ओहारे' एयरपोर्ट पर पहुँचे। स्वागत हेतु आए प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. माधुरी बहन एवं शिकागो के मुक्तों से मिल कर एयरपोर्ट से सीधा होटल 'हॉली डे इन'-स्कोकी पहुँचे। वहां नित्यविधि करके साढ़े ग्यारह बजे ब्रंच करके आराम किया। सायं पू. पंकजभाई शाह द्वारा आयोजित 'स्वाति' इंडियन रेस्तरां में भोजन करने गए। भोजन के बाद प.पू. गुरुजी के साथ प.पू. दीदी एवं कुछ मुक्त डॅस्प्लेन्स का हमारा नया सत्संग हॉल देखने के लिए गए। वहां कई स्वयंसेवक सेवा करते हुए ठहरे थे। प.पू. गुरुजी ने धुन की और आइसक्रीम का प्रसाद लेकर कॉपरनिकस सेन्टर गए, जहां पर महोत्सव की सारी सभाएँ आयोजित होनी थीं। दो दिन पहले भारत और पॅरिस से आए भक्तों ने 225 से भी अधिक महापूजा के सॅट रेडी करके सारी तैयारियाँ पूरी ही की थीं कि तभी प.पू. गुरुजी, संत-कुछ मुक्त एवं प.पू. दीदी व पू. डॉ. नीलम दीदी के आगमन से सभी खूब हर्षित हुए और सेवकों की अद्‌भुत भक्ति-लगन से प्रसन्न होकर उन्हें प्रसाद देकर, देर रात्रि को हॉटल लौटे।

अगले दिन **10 जून**—सुबह करीब साढ़े नौ बजे कॉपरनिकस सेन्टर के प्रांगण में श्वेत शामियाने में 'समूह महापूजा' से 'ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' की मंगल शुरुआत हुई। मंच की पृष्ठभूमि पर शुभ-मंगल के प्रतीक कलश पर 'धाम, धामी व मुक्त' की मूर्ति शोभित थी। गुणातीत परंपरा के वारिसदार ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी एवं ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा व बेन की मूर्ति से मंच मानो मंदिर ही बन गया! मंच पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा दिया गया गुणातीत समाज का लोगो भी रखा गया था—जिस पर सूत्र **'यूनीटी इज़ अल्टीमेट डिवोशन'** के साथ **'गुणातीत समाज की जय- 1966'** अंकित था।

गुणातीत स्वरूपों के मुख से अकसर सुना है—***वशी की महापूजा में भगवान साक्षात् खड़े हो जाते हैं।*** सो, स्वयं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा ही महापूजा विधि सीखे **प.पू. वशीभाई** आचार्य के रूप में सहयोगी पंडितों के साथ सभी को महापूजा का महत्त्व समझाने और करामात सिखाने के लिए आज मंच के मध्य में बैठे थे। उनके दोनों ओर प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप सभी को दर्शन एवं आशीर्वाद देने के लिए विराजमान थे। पंडाल में संत मंडल से मर्यादित दूरी पर छोटे मंच पर, **प.पू. हंसा दीदी** की निश्रा में सभी केन्द्रों की बहनें बैठी थीं। इस महापूजा की विशेषता यह थी कि ध्वनिमुद्रा के माध्यम से प्रभु से साक्षात् वार्तालाप-प्रार्थना करती पू. वशीभाई की मधुर वाणी, श्लोकों एवं भजनों में निमग्न होकर सभी ने विधि संपन्न की। सच, **विदेश की धरती पर ऐसी 'समूह महापूजा' अचरज की बात थी।** क्योंकि—हर एक टेबल पर रखी गई महापूजा में छोटी से छोटी सामग्री का भी विशेष ध्यान रखा गया था। महापूजा का पूरा सॅट यजमानों को स्मृति के रूप में साथ ले जाने के लिए भेंट दे दिया गया। माहौल बहुत दिव्य-मंगलमय लग रहा था।

महापूजा संपन्न होने के बाद **प.पू. भरतभाई** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

...महापूजा आहुति देने का एक अवसर था। जब यज्ञ होता है तो उसमें आहुति दी जाती है। पप्पाजी कहते थे कि महापूजा एक यज्ञ है और ऐसा यज्ञ हमने आज किया है... तो, ***काकाजी-पप्पाजी शताब्दी पर्व के अवसर पर हमें यह आहुति देनी है कि सुहृद्भाव रखने में हमारा 'स्व' का भाव, इगो, मान, अहंकार, प्रकृति, स्वभाव जो बाधित होता है, उसे अर्पण करना है...*** *सच्चे भाव से की गई प्रार्थना भगवान को पहुँचती है। चाहे वह स्वार्थ की प्रार्थना हो, भगवान को राज़ी करने की प्रार्थना हो, या फिर चाहे भक्तों की सेवा करने की प्रार्थना हो... आज हमें संकल्प करना है कि हमें अन्य किसी को नहीं देखना है और अपने भीतर झांकना-देखना है कि मेरे में कितना सुहृद्भाव प्रगटा है, काकाजी और पप्पाजी को राज़ी करने के लिए मैं कितना सुहृद्भाव से हर पल जी सकता हूँ–वो हमारी सच्ची शताब्दी है...*

तत्पश्चात् जिन-जिन परिवारों एवं मुक्तों ने शिकागो में शताब्दी निमित्त तन, मन, धन व आत्मा से सेवा की, प.पू. वशीभाई ने उनका आभार व्यक्त किया और... **प.पू. दिनकरभाई** ने आशिष बरसाते हुए कहा–

...इस महापूजा का ऐसा माहौल बना है कि यदि बिल गेट्स या वॉरन बफ़ेट जैसे धनवान करोड़ डॉलर देने के लिए यहां से डाऊनटाऊन बुलाएं, तब भी कोई जाने के लिए इच्छुक नहीं होगा। हमारे अंदर जितनी महिमा बैठेगी, उतना आनंद आएगा। वो आनंद हम क्यों न लें? ***किसी का नॅगेटिव देखने से क्या फ़ायदा है? हमारा दिमाग़ और बिगड़ जाएगा... हर एक का अच्छा ही देखो।*** *सभी गुणातीत स्वरूप यही कहते हैं... यह हमारा ही उत्सव है, सब इकट्ठे मिल कर काम करेंगे तो होने वाला है। किसी को छोटी-सी भी तकलीफ हो, तो उसे अपनी मान कर उसे संभाल लें। यह करेंगे तो काकाजी-पप्पाजी हमें भीतर में दस गुणा शांति और आनंद देंगे...*

अंत में **'अथ महापूजाविधिः'**–ऑडियो सी डी का अनावरण **प.पू. शांतिभाई साहेब** के वरद् हस्तों एवं पुस्तक का विमोचन **प.पू. निर्मलस्वामिजी** के वरद् हस्तों होने के बाद सभा का समापन हुआ।

सायं अल्पाहार के बाद सभी कॉपरनिकस सेन्टर के ऑडिटोरियम के बाहर एकत्रित हुए। वहां दाईं ओर गुणातीत समाज के उद्भव एवं विकास की झांकी कराती संक्षिप्त, लेकिन आधुनिक तकनीक से अंग्रेज़ी, हिन्दी और गुजराती–इन तीनों भाषाओं में विस्तृत जानकारी देती प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र थी।

सायं 5:00 बजे के लगभग प्रथम सत्र की शुरुआत **पू. हितेनभाई, पू. अंकुरभाई** एवं **पू. राकेशभाई** द्वारा प्रस्तुत की गई आवाह्न धुन एवं भजन से हुई।

इसी दौरान **संत भगवंत साहेबजी** ने मंच पर प्रवेश किया और अद्भुत स्वामीसेवकभाव का दर्शन कराया। दरअसल, मंच के मध्य श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी की मूर्ति के ठीक नीचे, एक ही लेवल पर, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं संत भगवंत साहेबजी का आसन शोभायमान था। सो, तकरीबन दस मिनिट तक प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. निर्मलस्वामिजी से बात करते हुए **संत भगवंत साहेबजी** यही आग्रह करते रहे– *मैं प.पू. स्वामिजी के साथ एक लेवल के आसन पर कैसे बैठूं?* और... आख़िर में वे साईड में रखे सोफे पर बैठे।

आज की सभा का विषय था – **'आत्मबुद्धि एवं प्रीति !'** सो, मंच की पृष्ठभूमि पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी की मूर्ति के दोनों ओर लाईट वाले ब्लॉक्स में 'आत्मबुद्धि व प्रीति' से जीवन जिए गृहस्थों की प्रतिमायें अंकित थीं। प.पू. दिनकरभाई की परछाईं बने **पू. पंकजभाई शाह** के अनुभव दर्शन के बाद, वचनामृत गढडा अत्यं. 11 में 'सीताजी की समझ' द्वारा 'आत्मबुद्धि व प्रीति' का परामर्श पवई के युवकों द्वारा तैयार की गई नाट्य वीडियो से प्राप्त किया। साथ ही ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. कांतिकाका के संयुक्त परिवार ने ताड़देव में रहते हुए किस प्रकार आत्मबुद्धि व प्रीति का माहौल बनाया, वह भी वीडियो द्वारा तत्कालीन संतों-मुक्तों के स्वानुभव से जाना।

पवई मंदिर से खूब निजी तौर से जुड़े पुराने जोगी **पू. गिरीशभाई पटेल** ने अपने प्रसंगों द्वारा 'आत्मबुद्धि व प्रीति' का दर्शन कराया।

अनुपन मिशन – नॉर्थ अमेरिका के प्रमुख **पू. विष्णुभाई** ने भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की साधुता और अपनेपन का अद्भुत दर्शन कराया।

पॅरिस के सत्संग के स्तंभ, **पू. प्रवीणभाई लाड** ने अपने वक्तव्य में कहा –

प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. बापू के समागम-माहात्म्य सिंचन से आपस में एक-दूजे के प्रति आत्मबुद्धि एवं प्रीति की भावना दृढ़ हुई है...

गुणातीत ज्योत – लंदन के वडील **पू. दिलीपभाई भोजाणी** ने भी ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के साथ के प्रसंगों से अवगत कराते हुए कहा –

सत्संग में आने से ही आत्मबुद्धि और प्रीति, संप-सुहृद्‌भाव-एकता जैसे शब्दों को जाना और समझा कि भौतिक समृद्धि की अपेक्षा आध्यात्मिक सुख-शांति का अधिक महत्त्व है...

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा –

...काकाजी-पप्पाजी ने हम सब में आपसी 'आत्मबुद्धि और प्रीति' भर दी है। आज सभी एक आवाज़ से यही कहेंगे कि ***काकाजी – पप्पाजी ने हमें भगवान दिए।*** *भगवान स्वामिनारायण तो 235 साल पहले हुए, लेकिन मानव स्वरूप में वे भगवान आज भी हमारे साथ हैं, यह बात उन्होंने हम सभी के जीव में बिठा दी।* ***... आत्मबुद्धि व प्रीति दिनकरभाई ने कैसी दृढ़ की है, इस बात का इस समाज से दर्शन हो रहा है... काकाजी के रेडियेशन्स दिनकरभाई में से बहते ही रहते हैं*** *और... इन्होंने अपने मोबाइल में कन्टीन्यूअस धुन रखी है; तो जो कोई उनके पास से गुज़रे वो धुन सुनता हुआ ही जाता है... यह कोई सामान्य बात नहीं, अध्यात्म से खूब भरी हुई है...* ***दिनकरभाई के पास जाओ तो काकाजी की मौजूदगी महसूस होती है। इसी कारण इनके इर्दगिर्द सारा समाज एकत्रित हुआ है... स्वामिजी और साहेब ने भी इस बात की पुष्टि की है। दिनकरभाई किस तरह वर्ते हैं, वो इस समाज से दिखाई पड़ता है... बापा अकसर कहते कि दादुभाई के यहां 'लव सत्संग' होता है और वह हमें दिनकरभाई द्वारा यहां मिला... !*** *यह कुटुंबभाव जितना बढ़ता रहेगा, उतना हमें सुख आता रहेगा... सभी ने गुणातीतभाव प्रगटाने की बात की।*

पर, काकाजी कहते – सुहृद्‌भाव से वर्तना, गुणातीतभाव प्रगटाने से अधिक है। दूसरा कुछ हमें समझ आए या न आए, पर ये योगी परिवार हमारा परिवार है – यह समझ रखें। ***काकाजी*** *उभराट की शिविर में एक बार बोले थे –* ***'हम सब एक, यह हमारा मंत्र है।' उसका आज दर्शन होता है।*** *वह जितना दृढ़ करेंगे, उतना काकाजी-पप्पाजी-स्वामिजी को जीवंत रख सकेंगे...*

संत भगवंत साहेबजी ने आशिष दिए –

...हम बापा के साथ रहे। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, बा के साथ हम जिए... आध्यात्मिकता कोई एक-दो दिन का काम नहीं है। धीरे-धीरे समझदारी बढ़ती जाए, प्रभु को राज़ी करने की भावना बढ़ती जाए, वैसे-वैसे आध्यात्मिक विकास होता जाए... ***शुद्ध समझ, साधु का ज्ञान – ट्रांस्फॉर्मेशन की बात दादुकाका ने सबसे की; उसके बाद ही गुणातीत समाज की रचना हुई... 'योगीजी महाराज भगवान का स्वरूप हैं' – यह बात दादुकाका ने ज़ोरशोर से की और कहा कि जो अक्षरधाम में हैं वे ही हमें मिले हैं।*** *जिसने लगाव से उनका स्वीकार किया, वो सच में पा गए...* ***अफ्रीका से फिर पप्पाजी आए।*** *सच,* ***इन दोनों भाइयों ने बापा के भाव से हमें प्रेरित किया, आश्रय में लिया।*** *जब समाज में भक्ति का किसी को ख्याल नहीं था या बड़े पुरुष को राज़ी कैसे करना, वह पता नहीं था; योगीबापा कैसे अद्‌भुत पुरुष हैं, उसका ख्याल नहीं था और उनके साथ कैसे वर्तना, वह विवेक नहीं था – ऐसे समय में* ***काकाजी, पप्पाजी और बा ने जो समर्पण किया, जिस समझदारी से जिए और हमें वैसा जीना सिखाया।*** *सच में* ***वे अनादि के स्वरूप थे, तभी यह सब संभव हुआ।***

...काकाजी आत्मबुद्धि और प्रीति का एक दृष्टांत देते थे – एक दंपति का लड़का रात को बारह-एक बजे घर लौटा। घंटी बजने पर पिता ने दरवाज़ा खोला और देखते ही इतनी देरी से आने पर उसे डांटा। दूसरी ओर अंदर आने पर माँ ने तुरंत पूछा – बेटा तू इतनी देर से बाहर था, तुझे भूख नहीं लगी? बाप उसे भले डांटता है पर उसमें ***'आत्मबुद्धि'*** *है। माँ को पता है कि इतनी देर बाहर घूमना अच्छा नहीं, पर वह उसका दोष नहीं देखती। उसे प्रेम ही देती है – उसका नाम है* ***'प्रीति'।*** *यह आत्मबुद्धि और प्रीति सत्संग में डॅवलप हो।* ***आत्मबुद्धि है यानि – दिखाई देगा, तो कुछ कह भी देंगे। पर, प्रीति होगी तो सामने वाले के लिए प्रार्थना होगी, उसका हित ही चाहेंगे... ऐसा समाज – काकाजी, पप्पाजी और बा खुद जिए और हमें जीने का अद्‌भुत मौका दिया है।*** *तो, मिलजुल कर-एक होकर जिएं...* ***शुरुआत में जब काकाजी अमेरिका आए, तब उन्होंने खूब कष्ट उठाया था। एक दिनकरभाई ऐसे थे जिन्हें महिमा थी...*** *काकाजी के साथ शुरुआत में विचरण में जाने का मुझे मौका मिला है, तो ख्याल पड़ता है कि* ***इन दिव्य पुरुषों ने कितना कष्ट सहा है। हम सब के लिए कितनी तपस्या की, तभी आज हम इतनी आसानी से भजन और भक्ति कर सकते हैं।*** *तो, मिलजुल कर इन दिव्य पुरुषों का ऋण अदा करें।*

इस सत्र में –

'अस्खलित मंगल कृपाधारा' – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा स्वयं कहे प्रसंगों, उनके द्वारा लिखे गए लेखों एवं पंचगीनी में की गई कथा-वार्ता इत्यादि को समाविष्ट की गईं पुस्तक का अनावरण **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** के पुनीत हस्तों के द्वारा हुआ।

'मॅग्नाकार्टा' नामक पुस्तक, जो ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा 26 जनवरी 1986 को गुणातीत समाज को दिए गए अंतिम आशीर्वाद का अंग्रेजी अनुवाद है, का अनावरण **संत भगवंत साहेबजी** के करकमलों द्वारा किया गया!

'जपयज्ञ' , 'शताब्दी वंदना' एवं **'पधारोने सहजानंदजी'** –इन तीन ऑडियो सी डी का अनावरण **संत भगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू. दिनकरभाई** ने किया।

अंत में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने कृपावर्षा की –

'अस्खलित मंगल कृपाधारा'–यह पुस्तक हाथ में पकड़ते ही एक संकल्प उठा कि इसे वर्षों पहले प्रकाशित करने की ज़रूरत थी। समाज को आध्यात्मिक जीवन का ख्याल आता। काकाजी के अद्‌भुत स्वरूप का दर्शन होता। *संप, सुहृद्‌भाव, एकता–तीन शब्द जो योगीजी महाराज ने दिए, वो हर एक के जीवन में साकार होने लगते।*

बापा संप, सुहृद्‌भाव, एकता पर खूब ज़ोर देते। एक-एक शब्द को अपना कर काकाजी जिए हैं और हज़ारों को प्रभु के मार्ग पर चलाया। *यह पुस्तक ज़रूर लेना और धीरे-धीरे शांति से पढ़ना।* ***मनन-चिंतन करने जैसी पुस्तक है।*** *हर एक को हठ, मान और ईर्ष्या परेशान करती है... भीतर में से यह निकल जाए तो 'अक्षरब्रह्म' की देह प्रगट हो जाए। जितना हम संप, सुहृद्‌भाव, एकता से जिएंगे, उतना हठ, मान और ईर्ष्या टलते जाएंगे... धन्यवाद हो काकाजी, पप्पाजी और कांतिकाका को – तीनों ने सुहृद्‌भाव से जीवन जिया। समस्त सत्संग समाज ने यह हूबहू देखा है...*

संतों के समागम से सत्संग और भक्ति जैसे-जैसे हमारे हृदय में प्रगटती जाती है, वैसे-वैसे काम, क्रोध और लोभ अंतर से निकलता जाता है। अंतर में शुभ विचार, चिंतारहित जीवन, सच्चा प्रेम प्रगटता है और यह प्रगट होने के बाद प्रभु के अद्‌भुत सुख की शुरुआत हो जाती है। हमारे हृदय में भगवद्‌भाव-भगवान का स्वाद-भगवान की मूर्ति का सुख प्रगटे, इसलिए हम यहां बैठे हैं। अंत जल्द ही लाना है... ***काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका को कोटि धन्यवाद कि मानव आत्माओं को आध्यात्मिक मार्ग पर चलाने के लिए अद्‌भुत शुरुआत की... इनका ऋण हम चुका नहीं सकते...*** *आपके बताए मार्ग पर चल कर हम जल्दी आपके हृदयाकाश में बैठ जाएं–ऐसी प्रार्थना...*

अगले दिन **11 जून** की सुबह 9:30 बजे सभा प्रारंभ हुई। आज का विषय **'गुणातीतभावना युक्त साधु की पहचान व उनके माहात्म्य'** के अनुरूप गुणातीत समाज के ज्योतिर्धरों की मूर्तियाँ ब्लॉक्स में लगाई हुई थीं। प.पू. दिनकरभाई की अद्‌भुत शैली है कि हमेशा मंगलाचरण बोल कर आशीर्वाद देते हैं। पर, आज तो प.पू. दिनकरभाई ने सभी स्वरूपों की मूर्ति के समक्ष हाथ जोड़ कर स्तुति करते हुए शुरुआत की,

जिसका वीडियो द्वारा दर्शन किया। और फिर... आशिष बरसाते हुए स्वामी की बात प्र. 11 की 128 का संदर्भ देकर **प.पू. दिनकरभाई** ने कहा–

...महिमा गाने की कोई लिमिट नहीं होती। महिमा जितनी गाएंगे, उतना अंदर का परिवर्तन होता जाएगा। *आज ये महिमा समझने के लिए हम यहां आए हैं। हम सब अपने गुरु की महिमा बढ़ाते ही रहते हैं। लेकिन,* ***आज ऐसा मौका है कि हम अपने गुरु से ज़्यादा, ऐसे गुणातीत स्वरूपों की जितनी महिमा समझेंगे, उतना हमारा अंदर का कलेवर बदल जाएगा...*** *साहेबजी अपने वर्तन से आज हमें इसी बात की ओर ले जा रहे हैं।*

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आगमन के पश्चात् वीडियो के माध्यम से ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी द्वारा गुणातीत ज्ञान को पाए संतों-युवकों के स्वानुभव से प्रेरणा पाई। गुणातीत ज्योत के वरिष्ठ भाई **पू. विरेनभाई पटेल** ने अपने प्रसंगों से झांकी कराई कि प्रभुधारक विभूति काकाजी-पप्पाजी किस प्रकार हमजोली बन कर रहे।

साधकों की आदर्शमूर्ति **प.पू. शांतिभाई साहेब** ने माहात्म्य दर्शन कराते हुए कहा–

'योगीजी महाराज इस ब्रह्मांड में साक्षात् श्रीजी महाराज का तत्त्व धारण किए हुए पुरुष हैं' – माहात्म्य का यह सिंचन काकाजी ने अपनी बातों में खूब किया। केवल सिंचन ही नहीं, बल्कि उन्हें समर्पित होने की हम में भावना प्रगटाई... काकाजी ने हमें बताया कि जसुभाई तुम्हारे मित्र हैं–ऐसा नहीं मानना। वे बापा के कृपापात्र हैं और महाराज का कार्य करने के लिए ब्रह्मांड में आए हैं। *तुम्हारे साथ उनका संबंध हुआ है, वो तुम्हारा अहोभाग्य है – ऐसा मानना। छात्रालय में रहते हुए काकाजी ने हर्षदभाई को आज्ञा की थी कि सुबह उठ कर साहेबजी को दंडवत् करना, जिससे अंतर में दृढ़ होगा कि वे तुमसे विशेष हैं और तुम्हारी आत्मा को आगे ले जाने के लिए आए हैं...* ***काकाजी कथावार्ता द्वारा बताते कि साधुता के गुण क्या है, समता क्या है... काकाजी और पप्पाजी ने हमारा खूब जतन किया है, हमें प्रेम दिया है, अपना बनाया है, सेवाएँ-आज्ञा दी हैं और अहोभाव से अपेक्षारहित सेवा कैसे हो - कोई तुम्हारा बखान करे या न करे - यह सिखाया और... साधना दौरान साहेब दादा ने हमारे साथ रह कर हमें बल दिया है।*** *हम काकाजी-पप्पाजी का ऋण चुका नहीं सकते। आज शताब्दी मना रहे हैं तो अंतर से प्रार्थना है कि हे दयालु! आपने हमारे जीवन में जो कार्य किया है, उसका हम अहोभाव करते रहें, उसी महिमा के विचार में रहें। आपके संबंध वालों की सेवा महिमा-दिव्यता से करने की उमंग सदा रहे, ऐसे जाग्रत बनें यही प्रार्थना।*

सांकरदा मंदिर की रीढ़ की हड्डी समान **पू. गुरुजी (पू. निष्कामजीवनस्वामिजी)** ने सत्संग जीवन के प्रसंग की स्मृति करते हुए प्रार्थना की–

...काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी मना रहे हैं, तो उनके अंतर का अभिप्राय-संकल्प था कि हमारा सारा समाज संप, सुहृद्‌भाव, एकता से जीवन जिए। उसी सूत्र को ध्यान में रख कर प्रत्यक्ष स्वरूप लगे हुए हैं। तो, ***कोई भी विचार या गिनती किए बिना, संबंध की ओर दृष्टि रख कर, हम आपको राज़ी करने के लिए 'जी हज़ूरी' करें और आपका ऋण अदा करें...***

तदोपरांत मंचस्थ गुणातीत स्वरूपों एवं महानुभावों को हार अर्पण करके गुणातीत समाज से जुड़े शिकागो, लंदन, पॅरिस, भारत, ऑस्ट्रेलिया इत्यादि के मुक्तों ने हर्ष व्यक्त किया।

संत भगवंत साहेबजी ने आशीर्वाद दिया–

...पप्पाजी ने समझाया था कि माहात्म्यरूपी कसर टालने के लिए महाराज बार-बार हमें लाते हैं। ***ऐसे उत्सवों, ऐसे दिव्य पुरुषों और अनुभवी संतों की बातों से हमारी समझ की कसर टलती जाती है और माहात्म्य बढ़ता जाता है।*** *काकाजी और पप्पाजी सच में बापा को 'भगवान का स्वरूप' मान कर पल-पल जीवन जिए। उनकी हर एक बात में अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान और अपने गुरु योगीजी महाराज-इन दो के सिवा और कुछ था ही नहीं। और... उन्हें राज़ी करने की ही सारी बातें करते... वे हमारी तरह जिए, खाया-पिया, घूमे-फिरे, लेकिन उनमें और हम में आकाश-पाताल का फर्क है। वे प्रभु में रह कर जिए। उनके पास जो भी आया, उसे प्रभु में जोड़ा और इंद्रियाँ-अंतःकरण प्रभुरूप हों, ऐसा जीवन जीने की सूझ-समझ अपने जीवन और वर्तन से देते गए...* ***काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी हम सभी के गुरु स्थान पर हैं। उनके हम सेवक-दास हैं।*** *वे भले हमें अपने साथ बिठाएं-बड़प्पन दें, लेकिन हमें पता है कि हम कैसे थे, पर उनकी कृपा से प्रभु को कुछ राज़ी करने हेतु जीवन जीते हुए हैं...* ***बापा के समय में भक्तों को आज जैसा माहात्म्य और दिव्यभाव नहीं था। लेकिन, हरिप्रसादस्वामिजी ने युवकों में माहात्म्य का ऐसा सिंचन किया, तो विवेक आया।*** *बापा को राज़ी करने की सुझ-समझदारी आई और बड़े संतों के प्रति पूज्यभाव रखने का व सेवा करने का आनंद मिला...* ***बापा ने मेरा हाथ दादुकाका के हाथ में रख कर उनसे कहा कि इन युवकों का काम आप संभालना।*** *काकाजी का जीवन योगीजी महाराज थे। उनके जीवन की प्रवृत्ति योगीजी महाराज की आज्ञा थी। काकाजी का निशान कि योगीजी महाराज जो कार्य सौंपें उसे पार उतारना था... काकाजी हम जैसा बन कर हमारे साथ रहते। हम में माहात्म्य का इतना सिंचन किया, जिससे बापा को राज़ी करने की भावना प्रगटी...* ***संसार में रहते हुए, संसार की आसक्ति छूट जाए-व्यापार-धंधा भले करो, लेकिन प्रभु-सत्पुरुष के साथ जुड़े होंगे और जैसे कि कल स्वामिजी ने कहा–संप, सुहृद्‌भाव, एकता रख कर जीवन जीओगे, तो सूक्ष्म देह के भाव भी बदल जाएंगे।*** *ऐसा जीवन जीने के लिए सच में काकाजी-पप्पाजी, स्वामिजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, कांतिकाका, बा का ऋण हम अदा नहीं कर सकते। लेकिन 'जी हज़ूरी' से सेवा करें... काकाजी-पप्पाजी ने भौतिक देह का त्याग किया, लेकिन उनमें रहा* ***परब्रह्म तत्त्व इन संतों के द्वारा साकार मिला है, है और है...*** *हमारे लिए* ***हमारे गुरु कभी अदृश्य होते नहीं,*** *वे ऐसे संतों के द्वारा मिले हैं... वे अपने देह का दुःख तो गिनते ही नहीं हैं। लेकिन,* ***हम आपस में खलबली मचाएँ या खींचातानी करें, तो उन्हें वह दर्द खूब असर करता है।*** *तो, वह हम न करें, उससे हम सबकी रक्षा करना–ऐसी बंधुजोड़ी प्रसंग पर प्रार्थना...*

ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने धुन से, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी ने ध्यान से और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने कथावार्ता से किस प्रकार गुणातीत समाज के मुक्तों का पोषण किया, इस तथ्य को वीडियो द्वारा संतों-युवकों के हृदयोगार जानने के बाद अंत में **प.पू. स्वामिजी** से आशिष प्राप्त की–

*...गुणातीतानंदस्वामी ने कितनी अद्‌भुत बात की कि भगवान के भक्त का गुण गाने से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है... इस अद्‌भुत शिविर में **एक संकल्प करके घर जाना कि सुबह या शाम भजन-प्रार्थना जरूर करनी है।** घर पर दास बन कर बोलना और घर व मंडल में संप, सुहृद्‌भाव व एकता से वर्तना है... सबके साथ प्रेम से बात करनी है। ऐसा करना मुश्किल है, लेकिन पक्का करना, बापा को याद करना... **वाणी में जितनी नॅचरालिटी आएगी, उतनी आत्मा की यात्रा प्रभु की ओर चलेगी...** वाणी में जितनी मिठास प्रगटती जाएगी, उतना हठ, मान और ईर्ष्या टलती जाएगी... **साहेब** जैसे बहुत अच्छे लीडर हमें मिले हैं। **उनकी वाणी मुझे खूब पसंद है।** वे किसी को डाँटते हैं, तो उसमें भी मिठास होती है। **उसमें दिखावा - दंभ - प्रदर्शन नहीं होता, नॅचरालिटी होती है।** उनके जैसी वाणी हम में प्रगटे। यहां आए हो तो एक नियम लेकर जाना कि वाणी से कभी भी नापास नहीं होना है। ईगोलेस वाणी होनी चाहिए। **ऐसी वाणी** किसी विरल व्यक्ति की होती है या **साहेब जैसे संत के साथ जुड़ जाओ, तो आती है।** वाणी यानि – प्रदर्शन का भव्य स्वरूप... सहजता से बोलना चाहिए। इस हेतु कथावार्ता का निरंतर मनन-चिंतन करना। **जिसकी ज़बान मीठी हो, उसका गुण लिया ही करना...** हम माहात्माओं को प्रवचन करते हुए बहुत ध्यान रखना चाहिए। **तुम्हारा जितना वर्तन हो, उससे कम ही बोलना चाहिए। वर्तन न हो और बड़ी-बड़ी बातें करना, वो वक्ता का लक्षण नहीं है।** भगवान के गुनाहगार नहीं बनना। दिखावे के लिए नहीं बोलना चाहिए... हमें योगीजी महाराज की तरफ निगाह रखनी है– 'वाणी अमृत से भरी, मधु समी...' **जैसे-जैसे वाणी मीठी, विनम्र और विवेक वाली होती जाए, वैसे-वैसे प्रभु के साथ संबंध बढ़ता जाए।** तुम्हारे पुण्य का ढेर बढ़ता जाए। भुलकुं (बालक) की यात्रा हमारी पूरी हो जाए। हम सत्संग में भुलकुं की यात्रा पूरी करने के लिए आए हैं। बालक बनना है, गरीब बन कर-ग़रज़ रख कर जीना है। इसलिए सत्संग है... घर में साधु के चरण पड़ें, तो पुण्य जाग्रत होता है... साधु में प्रभु का वास है, उनके द्वारा प्रभु बोलते - चलते हैं... वाणी जब तक मीठी नहीं होगी, तब तक भक्ति नहीं प्रगटेगी... तुम अपना अहंकार पहचान नहीं पाओगे... जैसे-जैसे कथावार्ता की जुगाली करते जाएंगे, संतों का जोग जितना रखेंगे, उसके फलस्वरूप भगवान हम में विवेक, विनम्रता और भक्ति प्रगटाएंगे ही, ही और ही...*

सुबह का सत्र यहीं समाप्त हुआ... गुरुहरि योगीजी महाराज की मरज़ी जान कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने बहनों के भगवान भजने हेतु क्रांतिकारी पहल की और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी भी इस कार्य में जुड़ गए व **'गुणातीत ज्योत'** की बहनों का शिरछत्र बने रहे। सो, शताब्दी निमित्त बहनों की ओर से धन्यवाद-अनंत वंदन करने दोपहर 3:00 बजे **प.पू. हंसा दीदी एवं प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में** बहनों की सभा का आयोजन था। मंच पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी की मूर्ति के साथ ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा-प.पू. बेन की मूर्ति का भी दर्शन हो रहा था। दोनों ओर ब्लॉक्स में बहनों के लिए आदर्श बनी-गुणातीतभाव प्रगटाई वीरांगनाओं का दर्शन हो रहा था।

सभा के प्रारंभ में भजन के बाद प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में भगवान भजती **पू. एंजी बहन** ने प.पू. सोनाबा एवं प.पू. बेन की मूर्ति का पूजन करके हार अर्पण किया और ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी की शताब्दी निमित्त प्रार्थना की। सभा में उपस्थित राजकीय महानुभाव **श्री राजा कृष्णमूर्तिजी** ने शताब्दी निमित्त आभार व्यक्त किया और 'स्मृति भेंट' स्वीकार कर वे विदा हुए।

अकसर देखा गया है कि कोई चीज़ हमें आसानी से उपलब्ध होती है, तो उसकी सही क़ीमत जान नहीं पाते। गुणातीत समाज में आज बहनें खूब सरलता से भगवान भज कर आध्यात्मिक जीवन जी रही हैं; लेकिन, जब समाज में स्त्रियों को यह समान अधिकार प्राप्त नहीं था, ऐसे माहौल में ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी एवं ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा ने क्रांतिकारी कदम उठा कर, जो अपमान सहा और उनकी निश्रा में तत्कालीन बहनों ने कसनी सह कर जो उन्नति की, वो अकल्पनीय थी। उसी की संक्षिप्त झांकी वीडियो द्वारा दर्शाई गई। तत्पश्चात् एक अन्य राजकीय महिला **श्रीमती लॉरा मर्फ़ी** ने सभा को संबोधित किया और उन्हें भी 'स्मृति भेंट' से सम्मानित किया गया। शिकागो एवं गुणातीत ज्योत के भाइयों ने प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई को हार अर्पण किया। इसी दौरान, शताब्दी के उपलक्ष्य में एक ही दिन में **प.पू. हंसा दीदी** द्वारा बनाए और गुणातीत ज्योत की स्वरवृंद बहनों द्वारा गाए भजन– *'हालो नी हालो खूब उल्लासे, अनिर्देशना प्रवासे'* का सभी ने श्रवण किया।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीर्वाद दिया– *हिन्दू धर्म में* ***'माता'*** *शब्द का जो प्रयोग किया है, वह खूब अलौकिक है... पुराण काल में गार्गी बड़ी लीडर माता थीं। उसके बाद सीताजी व और भी देवियों का हम स्मरण करते हैं।* ***स्वामिनारायण भगवान के समय की लाडुबा-जीवुबा और अन्यों का भी प्रशंसनीय वर्णन है। लेकिन, काकाजी और पप्पाजी ने इसे ऑर्गनाइज़्ड वे में परिवर्तित किया। उसमें सबसे महत्त्व की बात यह है कि किसी को फोर्स नहीं किया गया है। हर एक को स्वतंत्रता दी गई है... सबने अपनी मरज़ी से किया। तो ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा दीदी और देवी बहन–ज्योत के चार पिलर्स ने आज महल खड़ा कर दिया...*** *पप्पाजी ने बहुत भावना से छुपी सेवा करके इन सब बहनों के लिए जो किया है, वह किसी भी संस्था या किसी भी जगह दिखाई नहीं पड़ता। वैसे ही हरिप्रसादस्वामिजी ने साधु के नियम में रहते हुए, काकाजी की आज्ञा का पालन करके,* ***प्रेम बहन, बेला बहन, सर्वेश्वर बहन*** *द्वारा बहनों का समाज तैयार किया। दिल्ली में आनंदी दीदी के फॅमिली मेम्बर्स विरोध में थे, लेकिन काकाजी का संकल्प, विज़न और डिटरमिनेशन था कि यह चेतना सेवा करने के लिए सत्संग में आई है... आज* ***आनंदी दीदी*** *जहां भी जाती हैं, तो उनका हँसना, सबको आदरभाव से बुलाना और सबके साथ मिलजुल कर बातें करना–* ***ये सब काकाजी-पप्पाजी की देन है...***

सो, गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से, ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी द्वारा एकांतिक धर्म सिद्ध करने की राह पर अग्रसर बहनों की स्तुति करने हेतु, सर्वप्रथम वीडियो द्वारा पवई की **प.पू. माधुरी बहन** का आध्यात्मिक जीवन सभी ने निहारा। उनका पूजन व हार अर्पण करके मीमेन्टो के रूप में **ब्रह्मस्वरूप**

काकाजी एवं पप्पाजी की मूर्ति की भेंट दी। संजोगवश, प.पू. माधुरी बहन का प्राकट्य दिन भी होने के कारण उनका अभिनंदन किया। और... प.पू. माधुरी बहन ने प्रार्थना करते हुए कहा–***...बा-बेन, ज्योति बहन, तारा बहन, देवी बहन, हंसा दीदी–इन्होंने बहनों के लिए जो शुरुआत की,*** *उसी के फलस्वरूप आज हम इतने भाग्यशाली हैं कि योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी का संकल्प साकार हुआ देख रहे हैं...* ***योगिनी बहन ने हमें सब स्वरूपों, भाइयों-बहनों का माहात्म्य समझाया...*** *काकाजी कहते कि आपको मुझ में हेत हुआ, तो आप सब एकांतिक हैं... कपड़े पहनने से साधु नहीं बन जाते। सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि* ***हमारा हृदय भगवा हो, साधुता हम में प्रगटे...***

अभिवादन की श्रृंखला में वीडियो द्वारा **प.पू. दीदी (दिल्ली)** को ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. गुरुजी द्वारा प्रदत्त अध्यात्म पथ का दर्शन करके, उनका पूजन करके, हार अर्पण करके मीमेन्टो दिया गया। और... भावपूर्ण व माहात्म्यसभर प्रार्थना करते हुए हुए प.पू. दीदी ने कहा–

...काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका, सोनाबा के चरणों में अनगिनत-करोड़ों-करोड़ों वंदन ! इनकी कुर्बानी की वजह से आज हम सब यहां बैठ पाए हैं... पहले गुरुजी मेरे जीवन में प्रविष्ट हुए। उन्होंने काकाजी-पप्पाजी-स्वामिजी और सभी स्वरूपों की महिमा भर कर उनका दर्शन कराया... *सालों पहले काकाजी ने पंजाब के महेन्द्र जयस्वालजी से कहा था कि मुकुंद को ऐसा-वैसा साधु नहीं समझना। पकाई साहेब से बोले थे–भविष्य में उसकी तो प्लेन में शोभायात्रा निकलेगी। तब मंदिर में साइकिल भी नहीं थी। पर, अब जब गुरुजी के साथ 85 मुक्त दिल्ली से प्लेन में आ रहे थे, तो काकाजी की कही हुई वह बात हम सबके स्मृति पट पर आ गई ! तो, उन्होंने हमें जो-जो आशीर्वाद दिए हैं, वो सच होने ही वाले हैं... काकाजी-गुरुजी को बहुत परिश्रम करते हुए देखा है।* ***काकाजी दिसंबर की ठंड में खुली जीप में पंजाब जाते, ऑटो व साइकिल रिक्शा में घूमे। तो, आज जब हमारे जैसों के लिए मर्सिडीज़ गाड़ी आकर खड़ी होती है, तब उसका आनंद नहीं आता, बल्कि आंखें गीली हो जाती हैं कि ओहो ! जिन पुरुषों के लिए यह होना चाहिए था, वे तो कितनी नॉर्मल लाइफ जीकर चले गए...***

काकाजी-पप्पाजी के स्थूल त्याग को इतने वर्ष हुए, लेकिन गुरुजी ने उनकी कमी महसूस नहीं होने दी। मानो उनके रोम-रोम में काकाजी-पप्पाजी हैं... ***गुरुजी का जीवन अंदर और बाहर दोनों से एक जैसा है।*** *सबको ख्याल है कि काकाजी के साथ उनका खूब निखालिस संबंध था और आज* ***इसी पारदर्शी व्यवहार के कारण वे सभी के दिल में तुरंत बस जाते हैं...*** *उनका वर्तन सबको छू जाता है...*

ये स्वरूप अपने वर्तन से इंटीमेसी सिखाते हैं। जो हमें प्रत्यक्ष स्वरूप मिले हैं, उनके जीवन से आत्मबुद्धि और प्रीति का ख्याल पड़ जाता है... गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है–कोटि जप, कोटि तप, कोटि व्रत, कोटि दान, कोटि यज्ञ करके जो भगवान और साधु पाने थे, वे हमें आज मिल गए हैं... उन्हें कोई स्वार्थ नहीं है। वे केवल हमें सुखी करना चाहते हैं। ***काकाजी*** *के मुख से कई बार सुना था–*

कोई कहेशे के आ संत तो बहु सारा रे, खरा कल्याणना करनारा रे।
एटलो ज गुण कोई (हैयामां) लेशे रे, ते तो ब्रह्ममहोल जई पुगशे रे...

यहां बैठे कइयों को गुजराती भाषा समझ नहीं आई होगी, पर ***ये जो दर्शन कर रहे हैं और यहां के समाज ने 'जी हज़ूरी' करते हुए जो परिश्रम किया है और दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई ने काकाजी को जो अखंड रखा है, तो स्टेज पर विराजमान सभी स्वरूपों की मूर्तियों को सिर्फ याद भी करते रहेंगे, तो भी हमारा बहुत बड़ा काम बन जाएगा - अंतर में ठंडक महसूस होगी।*** *काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी मना रहे हैं... काकाजी-पप्पाजी ने स्थूल रूप से हमारे बीच से भले ही विदाई ले ली, लेकिन हम पक्का मानते हैं कि वे गए नहीं हैं, तभी तो उनका कार्य चल ही रहा है। पर,* ***सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों के चरणों में एक प्रार्थना है कि हम सब आपकी स्थूल हाज़िरी में आप सबकी शताब्दी मनाएं। आप हमें ऐसा बुद्धियोग देना कि आप ऐसे राज़ी होएं कि सौ-सौ साल तक आपको धरती पर रहने का मन हो...***

तदोपरांत, ब्रह्मस्वरूप काकाजी द्वारा स्वरूपयोग का मार्गदर्शन लेकर, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के प्रति समर्पित होकर जो हरिधाम में साधु जीवन जीने आईं और आज **'भक्तिआश्रम'** में रहती कई बहनों का जतन कर रही **'प.पू. प्रेम बहन'** का वीडियो द्वारा परिचय प्राप्त किया। प.पू. प्रेम बहन की अनुपस्थिति में **प.पू. सर्वेश्वर** बहन ने उनकी ओर से पूजन, हार एवं मीमेन्टो स्वीकारने के बाद भगवान स्वामिनारायण एवं गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के साथ का ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. कांतिकाका के पारायण के प्रसंग की स्मृति करते हुए आशीर्वाद दिया –

दो दिन से अद्भुत - पावन मंगल दिन का आनंद ले रहे हैं। कोई नसीब कहा जाए कि बिना किसी साधन ऐसी बातें और सुंदर अवसर हमें मिलता रहता है... ***सनाथ कैसे रहना, वह काकाजी और पप्पाजी ने अपने स्वरूप निश्चय से बताया। जीतेजी मर कर किस प्रकार वचन आत्मसात् करना वह स्वयं जीकर बताया। बहनों का अद्भुत कार्य यदि उन्होंने साकार नहीं किया होता, तो हम तो इस लायक भी नहीं कि (हंसा) दीदी के साथ बैठ सकें।*** *ऐसा अद्भुत जीवन उन्होंने जीना सिखाया... जैसा कि स्वामिजी ने कहा – काकाजी, पप्पाजी और कांतिकाका का ऋण हम चुका नहीं सकते।* ***साहेबजी की जो सहजता है, गुरुजी की काकाजी के प्रति जो वफ़ादारी है, दिनकरभाई एवं सबका जब जीवन निहारने का सौभाग्य प्राप्त होता है, तब अंदर से एक ही प्रार्थना निकलती है कि हम अपने मन-बुद्धि को कह सकें कि प्रभु पहले आप, बाद में अन्य सब। आप सब करके बैठे हैं, हमें तो उसका प्रसाद लेकर आगे जाना है...*** *हम ऐसे पात्र बनें, आपकी शोभा बढ़ाएं... जैसे कि सभी स्वरूपों के अंतर की भावना है कि हम सब एक होकर इस अद्भुत संप्रदाय की जो गरिमा-उपासना है, उस मार्ग पर चल सकें... हमारे तंत्र पर आप अधिकार करना, हम पर आपका शासन होगा, तो अपनी भूल देख कर हम आगे जा सकेंगे... हमें मिले स्वरूप का हम सेवन कर सकें...*

यह वर्ष खूब ऐतिहासिक कहा जाए कि अप्रत्यक्ष रूप से गुरुहरि योगीजी महाराज ने 1966 में जिस एलिवेटिड ग्रुप का सर्जन किया, उसे 28 मई को पचास वर्ष पूर्ण हुए। साथ ही गुणातीत ज्योत की स्थापना – बहनों को भागवती दीक्षा लिए भी पचास वर्ष पूर्ण हुए। तत्कालीन रूढ़िचुस्त व कूपमंडूक समाज की तनिक भी परवाह

किए बिना, ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की निश्रा में जिन्होंने दिव्य पथ पर डग भरा, ऐसी चार वीरांगनाओं-गुणातीत ज्योत की स्तंभ सरीखी **प.पू. हंसा दीदी, प.पू. ज्योति बहन, प.पू. तारा बहन और प.पू. देवी बहन** का वीडियो द्वारा न केवल परिचय प्राप्त किया, वरन् हमें क्या प्राप्ति हुई है उसका महत्त्व जाना ! और... इन सभी बहनों को नमन करते हुए प्रत्यक्ष हाज़िर **प.पू. हंसा दीदी** का पूजन करके हार अर्पण किया और मीमेन्टो दिया; जिसे हाथ में लेते ही कुछ क्षण के लिए उन्होंने अपने शीश पर विराजित किया और **वे इतनी गद्गद् हो गईं कि कुछ बोल ही नहीं पाईं, पर सभी को एहसास करा दिया कि इन पुरुषों की बदौलत ही हम आज उज्ज्वल हैं।**

जिन्होंने अपने मॅडिकल कॅरियर के तजरबे से ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की निजी सेवा अंत तक की, उन **पू. डॉ. नीलम बहन** का भी पूजन व हार अर्पण करके धन्यवाद किया गया। उन्होंने प्रार्थना करते हुए कहा–

...पप्पाजी की बातें करते हुए दीदी ने हमेशा कहा है कि उदासी, विक्षेप, अभाव में जाना ही नहीं। यदि जाते हो तो वह तुम्हारी कसर है–ऐसा मान कर भजन करना और ज़्यादा से ज़्यादा सेवा करना। *बार-बार प्रसंगों पर यही उपाय करोगे और भजन करोगे तो निरंतर गुणातीतभाव में रहते हो जाओगे... बड़ी से बड़ी बात–यदि साक्षात्कार किए पुरुष का दर्शन किया हो, उनका आशीर्वाद, ज्ञान, वाणी और कृपा हो, तो ही 'गुणातीतभावना' समझ आएगी, बुद्धि में बैठेगी और वर्तने का मन होगा...* ***गुरु और गुरुहरि का जो जोग मिला, तो भले पप्पाजी स्वधाम गए हैं लेकिन प्रगट और प्रत्यक्ष हैं। एक क्षण के लिए भी हमें अकेले नहीं छोड़ा...*** *हमारी प्रगति प्रत्यक्ष स्वरूपों के सान्निध्य में हँसते-खेलते हो रही है;* ***उस सुख का कोई वर्णन नहीं है, पर उसे बांटना है, जो दिनकर अंकल सबको बांट रहे हैं...*** *बड़े तो बड़े हैं ही, लेकिन संबंध वाले सभी ब्रह्मनियंत्रित ही है, ऐसा मान कर हम जिएं।*

पश्चात्... गुणातीत ज्योत की नींव-समान एवं स्वयं गुरु स्थान पर होते हुए भी, **प.पू. हंसा दीदी** ने एक साधक की अदा से आशीर्वचन उच्चारे–

...सत्पुरुष के वचन को अब हमें जीवन बनाना है... काकाजी-पप्पाजी दोनों भाइयों का आपस में इतना प्रेम-प्रीति थी, जिससे यह सारा समाज रच गया...

जब से यह उत्सव मनाने का पक्का हुआ, तब से मैंने सोचा था कि यह उत्सव मैं सभी बहनों के साथ ज्योत में मनाऊंगी। ज्योति बहन ने कहा था कि मैं तो जाने वाली हूँ। वाकई, ***ज्योति बहन ने हरिधाम, पवई, दिल्ली की बहनों के साथ बहुत बड़ा कार्य किया है...*** *देवी बहन हमारी विदेश मंत्री है, तो उनका जाना बनता है।* ***मैंने तो यही पकड़े रखा था कि ज्योत में रह कर बहनों के साथ उत्सव करेंगे। पप्पाजी ने दर्शन कराया कि तूने आग्रह क्यों रखा? तुम मुझसे पूछने के लिए खड़ी क्यों नहीं रहीं? हम सभी का अपने भगवान के साथ संबंध होता है, पर उसे संभालना सीखना पड़ता है...*** *देवी बहन को फ्रेक्चर आया, तो ज्योति बहन ने मुझसे कहा कि तुम्हें जाना है।* ***हम चारों बहनों में ऐसा रहा कि एक-दूसरे को***

कहें तो स्वीकार कर लेते हैं... *पर, नहीं आने के लिए मैंने जो पकड़ कर रखा, वह मुझे पकड़ कर नहीं रखना था...* ***मैं एक पाठ सीखी कि किसी भी चीज़ का आग्रह नहीं रखना।*** *ज्योति बहन को मैं सच में बड़ा मानती हूँ। मित्रभाव से भले एक बार ना कहें, लेकिन वे कहें तो मान ही लेना चाहिए। उसमें मेरी कैसे भूल हुई, वह मुझे पता नहीं... कई बार हम सीधी तरह न मानें, तो भगवान अनुभव करवा कर संप, सुहृद्‌भाव, एकता का अपना वचन पलवाते हैं... भगवान स्वामिनारायण ने एकांतिक धर्म की स्थापना की, वो उनका खूब आभार है... योगीजी महाराज का आभार कि उन्होंने काकाजी-पप्पाजी की भेंट दी और उनके साथ आत्मबुद्धि और प्रीति कराई... काकाजी, पप्पाजी और बा की एकता ने सारा गुणातीत समाज स्थापित कर दिया और उसके हम सभ्य हैं... मैं रोज़ प्रार्थना करती हूँ कि* ***हे स्वामिनारायण भगवान, हे गुरुहरि पप्पाजी–मेरी मुझ से रक्षा करना, ताकि आपकी सच्ची भक्त बन सकूं*** *–यही सर्वोपरि स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना...*

अंत में–भगवान स्वामिनारायण एवं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी द्वारा प्रज्वलित गुणातीत परंपरा महिला समाज में किस प्रकार प्रज्ज्वलित रही, उसे दर्शाती **'ज्योत से ज्योत'** वीडियो द्वारा दर्शन किया और साथ ही ऐसी कई बहनें जो अब देह से मौजूद नहीं हैं, लेकिन प्रभु भक्ति में जीवन बिताया, उनका भी दर्शन किया। प.पू. दिनकरभाई की 108 वर्षीय मातुश्री **पू. दीवाळीबा** को पू. एंजी बहन ने हार पहना कर, उनका अभिवादन किया और... शताब्दी निमित्त केक के प्रसाद से इस सत्र का समापन हुआ।

देर शाम 8:00 बजे पुनः सभी हॉल में एकत्रित हुए, जहां **'भक्ति अर्घ्य'**–ट्रीब्यूट नाईट का विशिष्ट कार्यक्रम था। गुणातीत समाज के ऐसे चुनिन्दा संत-साधक-समर्पित गृहस्थ जिन्होंने अपने-अपने अंग के अनुरूप प्रगट गुरु के साथ न केवल अद्‌भुत संबंध स्थापित किया, वरन् वर्तमान व भावि मुक्तों के लिए आदर्श स्थापित किया, उन्हें टीम स्पीरिट से सम्मानित करने का यह अवसर था। गुणातीत समाज में यूं तो कई प्रकाशित हीरे हैं, लेकिन जैसा कि **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** कहते– *गेईम्स में अॅवॉर्ड भले ही एक को-कॅप्टन को दिया जाता है, पर वह पूरी टीम का ही बनता है!* यूं, ऐसे आठ हीरों का चयन किया गया, जिनका अभिवादन करने से ऐसे सभी मुक्तों का सम्मान हो जाता है।

आज की युवा पीढ़ी को भक्ति के मार्ग पर अग्रसर करने के लिए यदि उन्हीं की रूचि अनुसार आधुनिक रीति अपनाई जाए, तो वे सहजता से प्रभु व संत से जुड़ जाते हैं। इस बात के मद्देनज़र आज का सारा माहौल 'ऑस्कर एवॉर्ड' के कन्सेप्ट से था, लेकिन दिव्यता-अलौकिकता से भरपूर था।

शिकागो-डॅस्पलेन्स मंदिर में दर्शन करने गया एक युवक, वहां रखी अलबम द्वारा 1967 से लेकर 2016 यानि अब तक गुणातीत समाज में हुए मुख्य प्रसंगों-उत्सवों का दर्शन करने के बाद, **'कॉपरनिकस हॉल'** में प्रवेश करता है और प्रथम पंक्ति में विराजमान गुणातीत स्वरूपों के चरण स्पर्श करके मंच पर जाकर अपना स्थान लेता है। वह युवक था–सूत्रधार **पू. स्वप्नील शाह**! मंच पर बड़े अक्षरों से **'गुणातीत डिवोशन'** अंकित था, जो उसमें लगे पीले बल्बों से जगमगा रहा था। इसके एक छोर पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी तो दूसरे पर ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी मानो दर्शन दे रहे थे।

- सर्वप्रथम – **'नित्य प्रार्थना'** से प्रभु को वश करने में सिद्ध, अनुपम मिशन के वरिष्ठ संत **प.पू. शांतिभाई साहेब** को मंच पर आमंत्रित किया गया। हॉल में उपस्थित सभी ने खड़े होकर तालियों से उनका अभिवादन किया। पॅरिस के पू. प्रवीणभाई लाड एवं उनके सुपुत्र पू. अंकुरभाई ने पूजन करके उन्हें ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी की गोल्ड प्लेटॅड मूर्ति अर्पित की; प.पू. शांतिभाई ने भावुक हृदय से मूर्तियों को छाती से लगाया और अत्यंत गद्‌गद् होकर प्रार्थना की –

  ...सभी दिव्य स्वरूपों के चरणों में वंदन और प्रार्थना करते हैं कि हे दयालु ! आप सदैव सभी के अंतर में रहो। आपको राज़ी करने का भाव सभी के हृदय में प्रगट रहे। आपके संबंध वाले जो स्वरुप हैं, उनके चरणों में दासत्वभाव से जीने वाले संबंध वाले मुक्तों की सेवा हुआ करे और हमारा 'समग्र' आप में लीन-एकाकार हो जाए – संपूर्ण रूप से पिघल जाए, हम निराकार बन कर आपको रोम-रोम में साकार कर सकें, प्रगटा सकें – ऐसा बल दो...

- **'गुरुआज्ञा'** ही जीवन का ध्येय बनाए सांकरदा के **पू. गुरुजी (प.पू. निष्कामजीवनस्वामिजी)** को ऑस्ट्रेलिया के पू. मनीषभाई शाह ने पूजन करके मीमेन्टो दिया। पू. निष्कामजीवनस्वामिजी ने प्रार्थना की –

  *सच कहें तो गुणातीत समाज स्थापित करने में काकाजी-पप्पाजी जो **होम** हुए, स्व की भी आहुति दी और हमारे लिए जो किया, उसके बदले में तो हम कुछ कर नहीं सकते, लेकिन प्रार्थना करते हैं कि उन्होंने जो 'होलाउपाड़' किया है, उनकी जो योजना है उसमें हम सभी संप, सुहृद्‌भाव, एकता से 'या-होम' होकर उनकी खूब शोभा बढ़ाएं...*

- सहज सेवा करना किसी का भी स्वभाव होता है, लेकिन **'निःस्वार्थ सेवा'** करना तो संत की कृपा कही जाए। ऐसी सेवा के गुण से गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की प्रसन्नता पाकर 'निःस्वार्थ सेवा' के मूर्तस्वरूप बने **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी** का पू. राकेशभाई शाह ने दंडवत् प्रणाम करके पूजन किया और मीमेन्टो अर्पित किया। प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामिजी ने उसे अपने शीश पर रख कर यह एहसास कराया कि **इन दो नींव के पुरुषों से ही गुणातीत समाज के ताज की चमक है** और... प्रार्थना करते हुए कहा –

  ...सभी के चरणों में एक ही विनती है कि स्वामिजी अपेक्षा रखते हैं कि भगवद्‌भाव से सेवा हो, पर वह सच में नहीं होती। वे करवा तो देंगे ही क्योंकि काकाजी-पप्पाजी ने क़ॉल दिया है; स्वामिजी ने गोद में रखा है, तो पक्का होने वाला ही है। पर, जल्दी हो जाए, तो भला है। तो, स्वामिजी इस बालक की यह प्रार्थना स्वीकारना। संबंध वाला कोई भी मुक्त हो, पर संबंध ही दिखाई दे और भगवद्‌भाव से उसकी सेवा कर सकें बस ऐसी कृपा बरसाना।

गुणातीत समाज की स्वर्ण जयंती वर्ष के सुनहरे पलों में मंच पर आकर, **पू. डॉ. महेन्द्र मर्चंट** ने अक्षरनिवासी हुए उन संतों, युवकों, मुक्तों का स्क्रीन पर अद्‌भुत दर्शन कराते हुए श्रद्धांजलि दी, जिन्होंने

गुरुहरि योगीजी महाराज की निश्रा पाकर स्वयं को धन्य किया और ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी द्वारा सर्जित **'योगी परिवार'** का सभ्य बन कर सहयोग दिया।

- गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज को प्रभु का स्वरूप मान कर जिन्होंने इनका सेवन किया और संबंध में आते सभी को अपने **'मातृत्व'** में भिगो कर प्रगट की महिमा भरी, ऐसी ब्रह्मस्वरूपिणी **दिव्य सोनाबा** एवं **प.पू. बेन** के प्रति श्रद्धासुमन अर्पण करते हुए, मुंबई के पू. परेशभाई परमार ने **पू. घनश्यामभाई अमीन** एवं **पू. दिलीपभाई भोजाणी** का पूजन करके उन्हें मीमेन्टो दिया।

  पू. घनश्यामभाई ने भावपूर्ण हृदय से कहा–

  मैं यह स्मृति भेंट सोनाबा के सुपुत्र एवं मेरे पिता प.पू. कांतिकाका को अर्पण करता हूँ...

  तत्पश्चात् प.पू. बेन की भक्ति के प्रति नतमस्तक होते हुए पू. दिलीपभाई भोजाणी ने बताया–

  प.पू. बेन के भजन एवं जतन की बदौलत ईस्ट अफ्रीका से निकला समाज लंदन सुरक्षित पहुँचा और आज भक्ति के मार्ग पर अग्रसर है...

  भक्ति अर्घ्य के इस कार्यक्रम के दौरान कोलम्बस के पंद्रह सत्संगी युवकों ने ***'आज मनाए गुरुहरि का आविर्भाव उत्सव...'*** भजन पर भक्तिनृत्य प्रस्तुत किया। अगले दिन तो कइयों की परीक्षा थी, लेकिन **प.पू. प्रेमस्वामिजी** की आज्ञा को महत्त्व देते हुए भक्ति अदा करने के लिए वे आए थे।

तत्पश्चात्–

- गुरु के बल से प्रतिकूल संजोगों की परवाह किए बिना **'सत्य-निष्ठा'** से अध्यात्म मार्ग पर जो अडिग रहे, ऐसे अनुपम मिशन के **प.पू. अश्विनभाई** को **'स्पीरीच्युअल इंटीग्रीटी'** का खिताब देकर सम्मानित किया गया ! परंतु, उनकी अनुपस्थिति के कारण उनकी ओर से **पू. हर्षदभाई** मंच पर आए और मुंबई के पू. दीपकभाई जागीरदार ने उनका पूजन करके मीमेन्टो अर्पण किया। **पू. हर्षदभाई** ने प्रार्थना की–

  ...शांतिभाई और अश्विनभाई–दोनों साहेब दादा के फेफड़े हैं। *दोनों के बिना चलता ही नहीं।* ***साहेब दादा*** *ने एक बार कहा था –* ***अश्विन जब से आया, तब से मैंने मेरी जेब में पैसे रखे नहीं। मेरा सब कुछ उसने संभाला है।*** *बड़े पुरुष की जिम्मेदारी लेकर उन्हें निश्चिंतता देनी, यह कोई आसान बात नहीं। खुद कितने ज़ीरो बन कर जीए हों, तब शक्य है... हम साधकों के लिए आदर्श और सुहृद्भाव का प्रतीक हैं... आज ऐसी प्रार्थना है कि जैसे उन्होंने साहेब दादा को राज़ी किया, ऐसे हम साहेब दादा को राज़ी कर सकें... सुहृद्भाव की ज्योत हम में प्रगटे...*

- **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** की निश्रा-गोद में पल कर **'सर्वदेशीयता'** की शिक्षा लेकर, उसे जीवन ध्येय बना कर सभी के लिए आदर्श बने **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** को आमंत्रित करके शिकागो के पू. पंकजभाई ने उनका पूजन करके मीमेन्टो दिया और... दोनों ने प्रार्थना करते हुए कहा–

  यह स्मृति भेंट केवल हम दोनों के लिए नहीं, बल्कि पवई मंदिर के सभी साधक भाइयों, बहनों और जुड़े सभी भक्तों को दिया गया है। ***जब भी इनके समक्ष कोई प्रस्ताव रखते हैं, तो सभी एक मन से***

11 जून की दोपहर 'बहनों की सभा'

काकाजी-पप्पाजी की बदौलत ही हम आज उज्ज्वल हैं।
- प.पू. दीदी

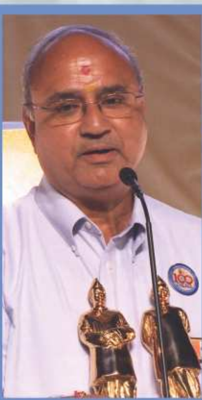

11 जून की सायं 'भक्ति अर्घ्य' – ट्रीब्यूट नाईट

गेईम्स में ॲवॉर्ड भले ही एक को-कॅप्टन को दिया जाता है...
पर, वह पूरी टीम का ही बनता है। – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

'मीशिगन लेक'

'क्लाउड गेट–मिलेनियम पार्क'

'आर्किटेक्चर क्रूज़'

'स्काई डॅस्क'

डॅस्पलेन्स मंदिर

तीर्थधाम–वॉकीगन...

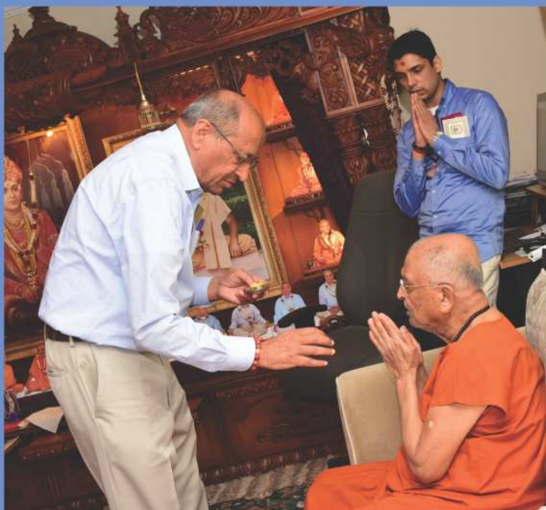

भगवत्स्वरूप दिनकरभाई का निवास स्थान

'कोलंबिया बॉटम कन्ज़र्वेटिव एरिया विज़िटर्स सेन्टर' पर

जहां 'मीसीसिपी, मिसूरी एवं इलीनोय'–तीन नदियाँ एक साथ मिलती हैं।

नायगरा फॉल्स पर...

इससे अनंत गुणा योगीजी महाराज की कृपा का धोध हम पर बहता है।
– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज

ऐसी अस्खलित कृपा में आने का हमें मौका मिला!!
– प.पू. गुरुजी

‘स्काईलॉन टॉवर’

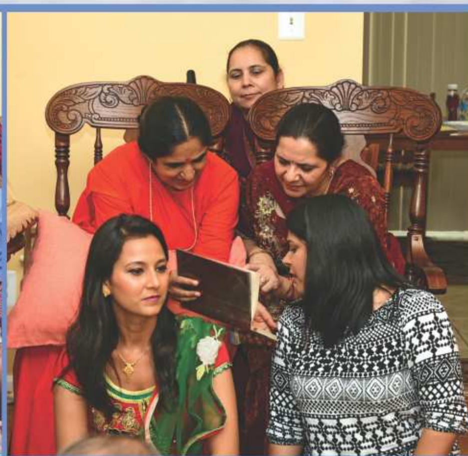

वर्जीनीया-प.भ. अश्विनीजी एवं सौ. सुदेशजी के घर

'स्मिथसोनीन एयर एण्ड स्पेस म्यूज़ीयम'

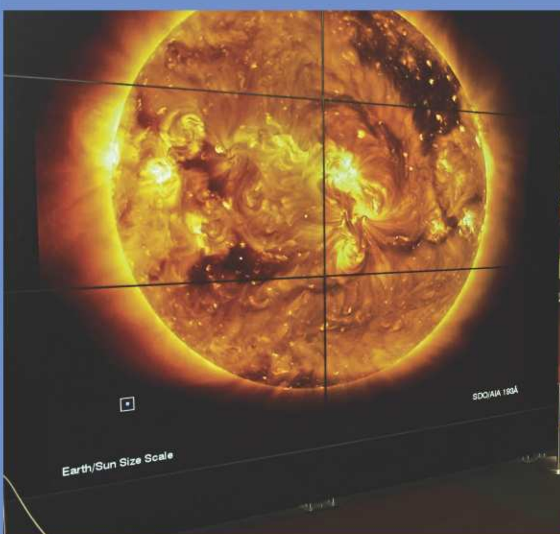

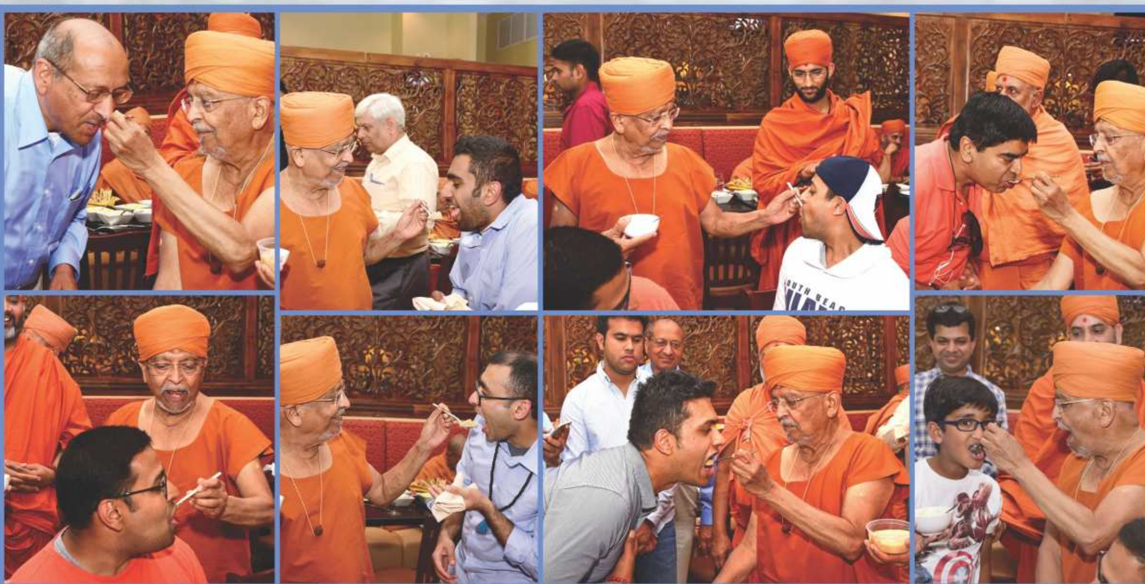

'फाधर्स डे'

'व्हाईट हाउस' (रियर)

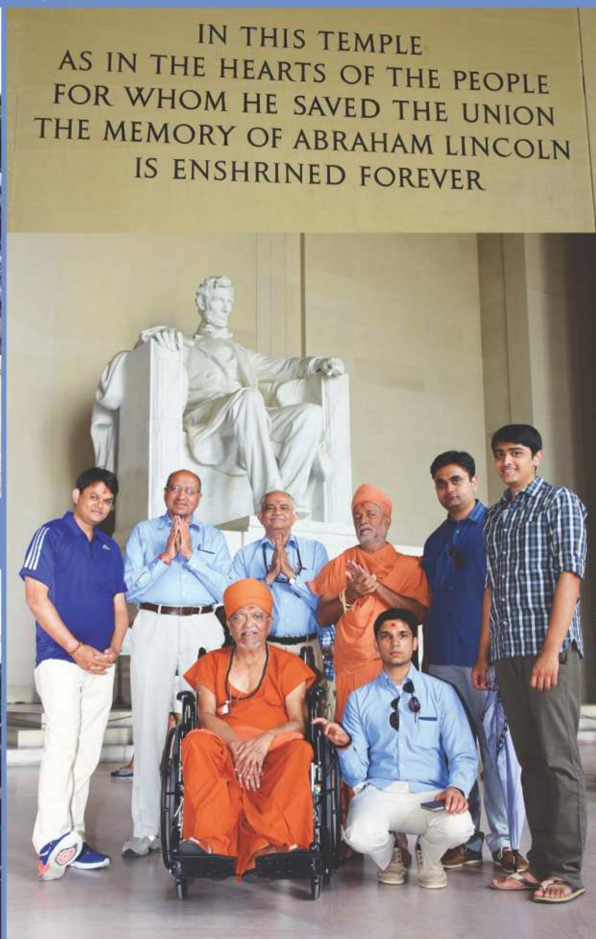

'लिंकन मॅमोरियल'

'युनाइटेड स्टेट्स कॅपिटल'

'व्हाईट हाउस' (रियर)

'हरशेस चॉकलेट वर्ल्ड'

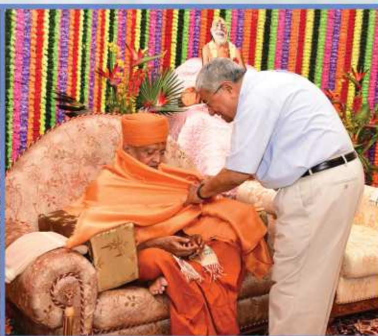

एलन टाऊन मंदिर में ...

ऐसे संत के साथ आप विदेश घूम रहे हो...

आपकी यह यात्रा 'तीर्थयात्रा' बन गई!

– संत भगवंत साहेबजी

शिकागो में जब तक थे तब तक वहां

और... उसके बाद आज यहां एलन टाऊन-मंदिर आकर

हमें दिल्ली मंदिर-घर का एहसास हो रहा है...

- प.पू. गुरुजी

न्यू जर्सी–'बेकाबू दिल से पू. सुनील शाह एवं सौ. दीप्ति भाभी'

पू. दीपक पटेल - सौ. निकिता भाभी के घर

पू. संजय शर्मा के घर

पू. चिराग भट्ट – सौ. अल्पना भाभी के घर

गुरुहरि पप्पाजी के प्रति जैसा भाव
उसी भाव से पू. भरतभाई ने प.पू. गुरुजी की आवभगत की।
- प.पू. दीदी

परसीपॅनी मंदिर के प्लॉट पर पुष्पांजलि

पंजाब दी कुड़ी मॅम गेंजिज़

'अभेददृष्टि का प्राईज़'

स्वीकार कर लेते हैं। सबको बहुत-बहुत धन्यवाद है। *यह **'सद्भाव'** और सत्पुरुषों के पास **'सरलता'** का ट्रीब्यूट है।*

❋ **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** अपनी परावाणी में अकसर याद करके जिनकी साधुता की मिसाल देते – ***हमारे कोठारीस्वामी-प्रेमस्वामी को देखो...*** और **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी** के कहे अनुसार – ***कोठारीस्वामी को स्वरूपों के साथ कभी ख़ानगी करते नहीं देखा।*** उन्हें **'साधुता'** के ट्रीब्यूट से नवाज़ा गया। परंतु, नासाज़ तबियत के कारण वे आ नहीं पाए, सो शिकागो के पू. दासकाका और पू. शंकरभाई ने उनकी ओर से **पू. ज्ञानस्वरूपस्वामिजी** का पूजन करके उन्हें मीमेन्टो दिया।

अंत में –

❋ ***'मुकुंद को सीधा चित्त ही है... वह मेरा पसंदीदा पात्र है...'*** **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** के अंतर के ये आशीर्वाद प्राप्त किए **प.पू. गुरुजी** को **'डिवोशनल लव'** की उपाधि से सम्मानित करते हुए लंदन के प्रेमी भक्त पू. किशोरभाई मास्टर्स ने पूजन करते हुए मीमेन्टो अर्पण किया। मीमेन्टो हाथ में लेते ही, प.पू. गुरुजी से अपने जीवनप्राण पुरुषों के प्रति अनजाने में ही, पर ऑस्करी अदा से, उनकी प्रीति की अभिव्यक्ति हो गई ! और आज के इस अद्वितीय सत्र की फलश्रुति रूप भावुक हृदय से कहा –

*ये **मेरा ट्रीब्यूट तो काकाजी का है।** मैंने कई बार कहा है कि यदि काकाजी न होते तो मेरा तो 'धड़ा' कौन करता ?*

भक्त चिंतामणि में एक पंक्ति आती है – जीव को यदि इधर-उधर जाना भी होगा, पर उसे (अक्षरधाम में) हँसते-रोते भी जाना पड़ेगा। मैंने एक बार काकाजी से पूछा कि हँसते-रोते यानि जबरदस्ती से-मारीमचड़ीने, यूं हंसते-रुलाते ले जाओगे ? काकाजी एकदम बोले–

यह महाराज ने कहा है न ? फिर तो गुणातीत (संत) दिए। उन्होंने यह पंक्ति बदली है – जीव को हँसते-खेलते ले जाएंगे।

*सो, **हमें कुछ नहीं करना। उनके साथ हमारा संबंध हो गया, इतना काफ़ी है।** बापा बात करते थे कि **पारसमणि का लोहे को स्पर्श हो, पर चिनाई काग़ज़ जितना भी अंतराय नहीं हो।***

एक ओर भीतर में सभी को प्रतीति है कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी ने भले ही स्थूल देह का त्याग किया, लेकिन पल-पल वे हमारे साथ हैं –हमारी वैसी ही परवरिश कर रहे हैं। लेकिन दूसरी ओर – जिनसे जीव की रिश्तेदारी है, ऐसे प्रभु के स्थूल सान्निध्य के लिए अंतर लालायित तो रहता ही है। अतः **अंत में, जब ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं पप्पाजी की अंत्येष्टि की कुछ झलक दिखाई गईं, तो उपस्थित सभी की आंखें अश्रु से छलक उठीं** और... वह इस हद तक कि सभी को आश्वस्त करने हेतु **प.पू. वशीभाई** मंच पर गए और ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी की धुन करती मूर्ति का दर्शन कराते हुए करीब पाँच-सात मिनिट धुन करवा कर सत्र का समापन किया।

12 जून – ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रागट्य दिन के मंगल दिन 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' की पूर्णाहुति सभा के निमित्त सुबह पौने दस बजे सभी हॉल में एकत्रित हुए। ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रागट्य दिन के आनंद को व्यक्त करते हुए गायकवृंद ने भजन प्रस्तुत किया! सर्वप्रथम सभा संचालक **पू. परीक्षितभाई** ने हर एक स्वरूप द्वारा दिए गए जीवनमंत्र की स्तुति करते हुए, उसे साकार करने हेतु सभी के चरणों में प्रार्थना की...

ब्रह्मस्वरूप काकाजी के स्वमुख से सुना है– *'धन्यवाद है मेरे साथीदारों को... जमात करामत...'* इससे उनका यह भी संकेत था कि किसी भी कार्य को सभी एक होकर करेंगे, तो जय जयकार अवश्य होगा और जिन्होंने भी साथ दिया हो - भावना रखी हो, उन्हें कभी भी भूलना नहीं चाहिए। सो, आशिष याचना से पूर्व **प.पू. वशीभाई** ने 'भक्ति अर्घ्य' की श्रृंखला में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के कहे अनुसार, **प.पू. निर्मलस्वामिजी** को दुनिया में सबसे बड़ी उपलब्धि **'दास के दास'** की उपाधि से अनौपचारिक रूप से सम्मानित किया और शताब्दी महोत्सव के उत्सव को सर्व प्रकार से सफल बनाने के लिए जिन्होंने भी सेवा, साथ-सहकार दिया, उन्हें प्रोत्साहित करते हुए धन्यवाद दिया। उन सभी की ओर से जो मंच पर आए, उन्हें **संत भगवंत साहेबजी** ने गले लगा कर आशीर्वाद दिया।

प.पू. वशीभाई ने प्रार्थना करते हुए कहा – *...काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का जबरदस्त वर्ष! परीक्षित ने आइन्सटाईन द्वारा गांधीजी के विषय में कही बात का जिक्र करते हुए बहुत अच्छी बात की –*
आज से दो सौ साल के बाद जब इतिहास लिखा जाएगा, तब लोग पी.एच.डी. करेंगे और उन्हें अचरज होगा कि काकाजी-पप्पाजी ने अक्षरपुरुषोत्तम के ज्ञान को कैसे सिम्पलीफाई करके दिया। बहनों के भगवान भजने का कार्य शुरू करके उन्हें कैसी स्वतंत्रता दी...

काकाजी जानते थे कि उनका प्रागट्य अक्षरपुरुषोत्तम के ज्ञान का रहस्य समझाने के लिए हुआ है... ***दादर मंदिर इतना बड़ा है लेकिन उसकी नींव में काकाजी हैं...*** *काकाजी, पप्पाजी और बा ने आत्मबुद्धि व प्रीति का उत्थान किया, तो हम सब भी मिलकर काम करें-दूसरों की खुशी में अपनी खुशी मानें। टॅकनीक – स्पीरीच्युआलिटी में और दुनिया में सभी के लिए काम आने वाली है। आज काकाजी का प्रागट्य दिन है। काकाजी के सब लाड़ले यहां बैठे हैं। तो जैसे कि महाराज और गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा कि मेरा प्राकट्य कार्य-कारण के लिए नहीं हुआ, बल्कि जीवों का अज्ञान टाल कर, उन्हें ब्रह्मरूप करने के लिए हुआ है। वो मूल अज्ञान टल जाए... गुरुजी ने कल बहुत अच्छा कहा कि हमें कुछ नहीं, बस आनंद करना है। तो, सब सुख से स्वभावरहित होकर, उत्सव का जो थीम है–आओ, सब मिल कर गुणातीत साधुता को प्राप्त करें – सबको ऐसी साधुता मिले यही प्रार्थना।*

ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने जिन्हें अपना अर्जुन कह कर नवाज़ा, उन **प.पू. महेन्द्र बापु** ने हृदयोद्‌गार प्रस्तुत करते हुए कहा – *...काकाजी अपने प्रागट्य दिन पर हमेशा कहते – जाओ, आज तक का सब माफ़, लेकिन अब नया प्रारब्ध खड़ा मत करना! तो सभी प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि आज तक के हमारे गुनाह माफ़ कर देना...* ***हमें संबंध वाले के दोष-प्रकृति नज़र आती है। उससे हमें आगे जाना***

है... तो आज कन्क्ल्यूडिंग सेशन में यह विचार करना है कि मैंने क्या प्राप्ति की और क्या वह शाश्वत् रही ? ***जैसे-जैसे हमारी कक्षा बढ़ती जाए, हमारी दृष्टि भेदरहित होती जाए।*** *तो, ऐसी दृष्टि प्राप्त करें... किसी सिद्धदशा की अस्मिता में अपनी साधना लंबी न करें। चौदहवें प्रकरण की बातों के मुताबिक जैसे गृहस्थ के लिए बीवी-बच्चे बंधनकारी होते हैं, ऐसे ही साधु के लिए चेले बंधनरूप हैं। वह न हो, ऐसी आप हम पर कृपा करना...*

प.पू. प्रेमस्वामिजी ने प्रार्थना की – *...काकाजी को निर्दोषबुद्धि और सुहृद्भाव खूब पसंद थे... इन पुरुषों ने अपने जीवन से ऐसा दर्शन कराया है। उनका समग्र जीवन भक्तों के लिए-हमारे लिए था... उन्होंने यही आग्रह रखा कि तुम हर एक में बापा, मेरा, स्वामिजी का दर्शन करो...* ***काकाजी ने कभी किसी को अपना बनाने का प्रयत्न नहीं किया... स्वामिजी की अद्भुत महिमा हमारे अंदर भरी है, तो वो काकाजी ने भरी है; यह कभी भूल नहीं सकते। जाने-अनजाने में मैंने या समाज ने काकाजी की उपेक्षा की वो सुना है, खुद देखा है। पर, उन्होंने कुछ भी नज़र में लिया ही नहीं।*** *उन्होंने योगी के बच्चों को 'योगी' ही माना... ऐसी संबंध वाली दृष्टि हमारी बने, यही सब स्वरूपों को हमसे कराना है। समाज बढ़े या न बढ़े, उससे उन्हें कोई लेना-देना नहीं। मंदिर बढ़ें उससे उन्हें कोई लेना-देना नहीं। लेकिन, हमारा सुहृद्भाव बढ़े उसके लिए उनका जीवन है। तो, हमारा अंदर-अंदर का सुहृद्भाव बस खूब बढ़े और आपके अंतर में ठंडक हो। जैसे कि काकाजी कहते कि तुम पाँच जने ऐसे तैयार होना कि हरिप्रसादस्वामिजी को ठंडक हो जाए।* ***काकाजी-पप्पाजी के लिए संतगण निजी था;*** *उनकी शताब्दी का उत्सव है, तो आप ही ऐसा बुद्धियोग देना कि हम सभी का जीवन ऐसा बने, जिस से कि हमारे सुहृद्भाव-दासत्व के लिए आपको कभी सोचना न पड़े...*

संस्था में हुए विमुख प्रकरण के समय गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी एवं प.पू. साहेब की महिमा की, की गई पुष्टि की स्मृति करते हुए **प.पू. निर्मलस्वामिजी** ने कहा – *...गुणातीत पुरुषों के चरणों में बैठने को मिला वह खूब आनंद की बात है... हमें ऐसे पुरुष मिले हैं जो समुद्र समान हैं। उस समुद्र में सभी नदियों को समाविष्ट होने की छूट है। लेकिन, उसमें समाविष्ट होने के बाद सभी को अपना अस्तित्व विलीन करने के लिए तैयार रहना पड़ता है और संपूर्ण रूप से विलीन होना पड़े... तो आज इन पुरुषों के चरणों में प्रार्थना करें कि* ***हम आपको समर्पित हुए हैं, तो इस समाज में संपूर्णतया निर्दोषबुद्धि हो...***

तत्पश्चात् वीडियो द्वारा **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** के आशिष पाए –

...इस अक्षरधाम की सभा में मैं हाज़राहज़ूर हूँ... बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव मनाने के पीछे यही हेतु है कि काकाजी-पप्पाजी ने गुणातीत समाज की स्थापना की है; नींव के इन पुरुषों ने जो परिश्रम किया, कसनी सही है, सो उनका ऋण चुकाने के लिए अलग-अलग स्थानों पर यह आयोजन किया गया... ***जैसे करमसद में जन्मे सरदार पटेल को पूरा भारत पहचानता है, उसी भूमि पर काकाजी-पप्पाजी जैसे पुरुष प्रगटे।***

तो, आध्यात्मिक जीवन जीकर जिन्होंने जबरदस्त मुक्त तैयार किए उनकी पहचान हो... *संप, सुहृद्‌भाव, एकता का जो उनका संकल्प है, वो पूरे गुणातीत समाज में होना चाहिए, तो हम सब मिलकर उसे वेग से बढ़ा कर इन पुरुषों का ऋण अदा करें...*

प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया–

...हम सबको योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी ने ग्रहण किया, वो बहुत बड़ी बात बन गई। *हमें जो उन्होंने स्वीकारा, उससे ख्याल पड़ता है कि वो कितनी मॅग्नेनिमस् (उदार) विभूति थीं। इस उत्सव के लिए वशी मुझसे कहते–गुरुजी, अमेरिका का जो उत्सव होगा, इट विल बी ए टर्निंग पॉइन्ट। मैं सोचता था कि क्या टर्निंग पॉइन्ट होगा ? लेकिन,* ***कल शाम को और तीन दिन का जो प्रोग्राम ऑर्गेनाइज़ हुआ है, उसमें सेवा करने वाले और उनकी प्रेरक मूर्ति दिनकरभाई को कोटि-कोटि धन्यवाद।*** *मेरी तो ऐसी रिक्वेस्ट है कि इन* ***सारे इन्टरव्यूज की वीडियो हर एक को गिफ्ट देनी चाहिए, ताकि सबको ख्याल आए कि सारा जो डॅवलपमेन्ट हुआ है, उसमें काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब का कैसा योगदान है ! इसे टर्निंग पॉइन्ट नहीं, तो फिर इसे क्या कहें–नो वर्ड्ज़, फ़ैन्टैस्टिक, मार्वलस, एक्सलन्स् एट पार जैसे शब्द इसके आगे न्यून लगते हैं। न भूतो, न भविष्यति जैसा उत्सव हुआ...***

काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी–ये विभूतियाँ बिल्कुल अलग हैं... बापा ने हमें जो ये जोग दिया, वो सच में उन्होंने ग्रेस की है... जैसे कि सभी ने काकाजी, पप्पाजी के सिद्धांतानुसार सुहृद्‌भाव, निर्दोषभाव की बातें की, वही भाव अब स्वामिजी, साहेब के प्रति रखना है... उसी में काकाजी-पप्पाजी राज़ी होने वाले हैं। ***काकाजी-पप्पाजी हमें जो रीत सिखा गए हैं, उसे पकड़े रखें।***

पहले भी कई उत्सव हुए हैं, लेकिन यह कुछ अलग प्रकार का हुआ। *यहां के लिए–जैसे कि स्वामिजी ने एक बार कहा था कि मंदिर का प्राण संत है।* ***मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा-पूजन करें, पर यदि ऐसे संत नहीं होंगे तो मूर्तियाँ हमें जीवंत लगेगी नहीं। लेकिन, मंदिर में ऐसे संत होंगे और उनके साथ हमारा एक संबंध होगा, तो मंदिर की मूर्तियाँ जीवंत लगेंगी।*** *यहां डॅसप्लेन्स में मंदिर होगा, पर जितना दिनकरभाई के साथ संबंध होगा, उतना ही मंदिर की मूर्तियों में दिव्यता का अनुभव होगा। मेरी बात अज़ीब लगेगी, लेकिन आज* ***अमेरिका का जो भी अस्तित्व है, वो दिनकरभाई के कारण है।*** *भारत में कितने संत हुए और उसमें भी गुणातीत संतों की परंपरा के कारण पुण्य उदित होता है। यहां जितने भी भक्त रहते हैं, वे दिनकरभाई को आगे रख कर कार्य करें...*

मंच पर विराजमान स्वरूपों को शताब्दी निमित्त हार द्वारा भावनाएँ व्यक्त करने के बाद, वीडियो द्वारा कुछ संतों, युवकों एवं मुक्तों के मुख से ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी के अंतर का हार्द जाना और फिर...

प.पू. दिनकरभाई से आशीर्वाद प्राप्त किया–

...काकाजी एक अलग चैतन्य-मिट्टी के थे... वो तत्त्व ही अलग था और उस तत्त्व को समझने की भावना है। *सब प्रत्यक्ष स्वरूप जो काकाजी-पप्पाजी के जोग में आए हैं, उन्होंने अंतर से जो दर्शन, समागम*

किया है, यह बात वे समझाते रहते हैं। तो, शताब्दी के पर्व पर हम वो समझें और कुछ लाभ लें। इस भाव से यह पर्व मनाया गया है। यह 'पर्व' है – पर्व का मतलब है कि और भी पर्व आने वाले हैं, यहां फुल स्टॉप नहीं है – इसकी श्रृंखला (सीरीज़) है। जब तक हम उस भाव में नहीं जाएं, तब तक यह पर्व 'पर्व' ही रहेगा। जब उस भाव को पाएंगे, तो सब गुणातीत स्वरूपों जैसी हमारी स्थिति हो जाएगी। काकाजी के प्राकट्य दिन पर यही प्रार्थना करते हैं कि हे स्वामिजी, हे साहेब दादा! ***हम में जो महिमा और समझ की कसर है, वो निकल जाए।*** *कल गुरुजी ने भी बताया कि हम जो भी हैं योगीजी महाराज-काकाजी के हैं, तो हमारा भी 'धड़ा' हो जाए...* ***स्वामिजी, साहेब दादा आप ही हमारे लिए काकाजी-पप्पाजी हैं। आप हम पर इतना बरसना कि हमारा अंतर साफ़ हो जाए...***

लंदन ज्योत में रहती बहनों की सेवा के लिए आधी रात को तत्पर, **पू. हरिशभाई साकरिया** ने शताब्दी पर्व के उपलक्ष्य में **प.पू. दिनकरभाई** के वरद् हस्त **'गुणातीतभाव दर्शन'** पुस्तक का अनावरण कराया। जो स्वयं गुणातीतभाव को पाए हों, वे ही 'गुरु गुणातीत' की बातों को समझने में सक्षम हो सकते हैं। इस पुस्तक में गुणातीत विभूति **ब्रह्मस्वरुप पप्पाजी** द्वारा 'स्वामी की बातों' पर किए गए निरुपण का संग्रह किया गया है; जो कि साधना मार्ग के पथ पर चल रहे पथिकों के लिए संजीवनी के समान है।

हमें मिले गुणातीत स्वरूप सहज सूचन को भी खूब महत्त्व देकर एक-दूजे के माहात्म्य का दर्शन कराते हैं। उत्सव के प्रथम दिन 10 जून की सायं प.पू. गुरुजी द्वारा आशीर्वाद के बाद, **संत भगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा था कि *मेरे कानों की तकलीफ के कारण मुझे गुरुजी का प्रवचन पूरा सुनाई नहीं दिया।* तब गुरुजी ने बताया था – *यहां बैठे हुए बोलते हैं, वो ठीक से सुनाई नहीं देता। पोडिअम् पर जाकर जो बोलते हैं, वो ठीक सुनाई देता है।* सहजता से संत भगवंत साहेबजी ने प.पू. गुरुजी से पूछा था – *फिर वहां जाकर बोलूं?* और... *'गुरुजी की आज्ञा है'* – यूं कहते हुए कमर की तकलीफ होने के बावजूद पोडिअम पर खड़े रह कर संत भगवंत साहेबजी ने आशीर्वाद दिया था। आज भी प.पू. गुरुजी की इस बात को याद रख कर वे पोडिअम पर खड़े रह कर आशीर्वाद देने के लिए आए –

मानव देह में गुणातीतभाव प्रगटाना, पहले तो यह भाषा ही समझ न आए। लेकिन, गुणातीतभाव को प्रगटा सकें ऐसा अनमोल समय-मौका हमें प्राप्त हुआ है। समग्रतया समर्पित होकर जिन्होंने यह मार्ग सुगम किया, ऐसी दिव्य विभूति प.पू. पप्पाजी-प.पू. काकाजी का शताब्दी पर्व मना कर हम उनका ऋण अदा कर रहे हैं। मानव देह में यह प्रगटाना मुश्किल बात है। जब बात ही समझ न आए, तो अमल में कैसे लाएं? पर, ***समझें या ना समझें, फिर भी यह बात हमारे जीवन में साकार हो, तो मानना पड़े कि भगवान के संतों की कृपा, दृष्टि, परिश्रम और संकल्प हो, तभी ऐसा संभव हो।*** *इन बड़े पुरुषों ने हमारे लिए कितना परिश्रम किया है... दिनकरभाई ने बहुत अच्छी बात की कि वही* ***काकाजी आज हमें हरिप्रसादस्वामिजी के रूप में मिले हैं; यह बात पकड़ कर हम यहां से जाएं। क्योंकि काकाजी-पप्पाजी ने तैयार करके हमें ये दिव्य संतों की भेंट दी... बड़े पुरुष देह धारण करके, हमें जो देना होता है वह देने के लिए, ऐसे***

सत्पुरुष में जोड़ कर वे जाते हैं। *वह हम पर बड़े से बड़ी कृपा है।* ***इन दिव्य पुरुषों का स्वीकार करना वही हमारी श्रेष्ठ भक्ति है।*** *योगीजी महाराज के प्रति हमें असाधारण लगाव और उन्होंने ही फिर हमें काकाजी में जोड़ा... प्रगट की उपासना का बहुत महत्त्व है...* ***ये दिव्य पुरुष हमें बीच मझधार में छोड़ कर नहीं गए, बल्कि भेंट देकर गए हैं।***

काकाजी *का जीवन देखें, तो वे स्वामिनारायण भगवान-योगीजी महाराज में खूब ओतप्रोत थे। उन्होंने हम सब को प्रभु में जोड़ा और महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी, शांतिभाई, अश्विनभाई, बहनों का माहात्म्य गा-गाकर,* ***हम सबको उनके साथ जोड़ कर खुद तो न्यारे के न्यारे रहे... योगीबापा ने हमें काकाजी में जोड़ा और फिर काकाजी ने हमें पप्पाजी में जोड़ा, तो उनकी कृपा से वैसा ही भाव उनके प्रति रहा...*** *जैसा कि दासस्वामी ने अपने इन्टरव्यू में कहा है–काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी की बाह्य रीति को देखें, तो किसी भी प्रकार से मॅचिंग दिखाई न दे, एक ही मॅचिंग दिखे कि 'गुणातीतभाव' में रहे अखंड प्रभुधारक संत ! लेकिन, उनके प्रति तनिक भी बराबरी नहीं हुई कि काकाजी हों तो ऐसा करें, स्वामिजी हों तो ऐसा करें। ऐसा कोई विचार मन में नहीं आया और टोटल प्रभु के रूप में उनका स्वीकार हुआ, वह उनकी कृपा... गुरुजी ने जैसे बात की कि* ***दिनकर अंकल अखंड प्रभु की प्रसन्नता के पात्र हैं। काकाजी को उन्होंने सच में पहचाना...*** *सच में* ***काकाजी की अनन्य प्रसन्नता का पात्र बन कर काकाजी की सेवा की है...*** *एक साधु धूनी जगा कर बैठा हो, तो अक्षरमुक्त अक्षरधाम का जीवन जीते हो जाएं।* ***गुरुजी ने बहुत सच्ची बात की है कि अमेरिका जैसे देश में इतना अद्भुत कार्य हुआ, उसका कारण स्वामिजी, प्रमुखस्वामिजी, संतों का विचरण है और ऐसे साधु धूनी जगा कर बैठे हैं, तो प्रगति हो रही है।*** *तो, हम मिलजुल कर इकट्ठे होकर इन दिव्य पुरुषों में काकाजी-पप्पाजी को देख कर, उनकी आज्ञा में रह कर जीवन जिएं...* ***हमारे लिए काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी उपास्य मूर्तियाँ हैं।*** *भले ही सद्गुरु बनें, पूजे जाएं, लाखों शिष्य इकट्ठे करें, लेकिन* ***इन दिव्य पुरुषों के हृदय में यदि शांति न दें, तो कोई क़ीमत नहीं-कौड़ी के हैं... इनकी कृपा के कारण हमारा अस्तित्व है...*** *तो हमारा फ़र्ज़ है कि मिलजुल कर रहें, सभी गुणगान गाएं और एकत्वभाव से एक-दूजे के पूरक बन कर भक्ति करें...*

शताब्दी महोत्सव के दो दिन जो दिव्य स्मृतियाँ मिली, उसकी मानो जुगाली कराते हुए स्क्रीन पर उसकी झांकियों का दर्शन करके, अंत में सार रूप **प.पू. स्वामिजी** की कृपावर्षा हुई–

काकाजी-पप्पाजी ने खूब परिश्रम करके, बापा को राज़ी करने के लिए 'संप, सुहृद्भाव, एकता' के मार्ग पर अग्रसर किया। *जैसे-जैसे संप, सुहृद्भाव, एकता सहज हो, वैसे-वैसे हठ, मान व ईर्ष्या टलती है और काम, क्रोध और लोभ विदाई लेते हैं। हम सभी को हृदय टटोल कर खूब जाग्रत रहना है... काम, क्रोध, लोभ यदि परेशान करते हों, तो समझ लेना कि हठ, मान, ईर्ष्या भीतर में मौजूद हैं और ये सब हैं इसलिए संप, सुहृद्भाव, एकता से जी नहीं पाते। सो, सुबह पूजा में प्रार्थना करना...*

जैसे-जैसे प्रभु के प्रति शरणागति बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे काम, क्रोध और लोभ पिघलते जाएंगे, हृदय हल्का फूल समान हो जाएंगा। ***तीस-चालीस मिनिट निर्विकल्प होकर भजन करेंगे, तो सुख, शांति और आनंद बढ़ता जाए... जब तक निष्ठा पक्की नहीं होगी, तब तक 'निर्दोषबुद्धि' दृढ़ नहीं होगी।*** *निष्ठा के पांच वचनामृत – प्र. 27, 37, 62, जेतलपुर 4 और 5 में भगवान स्वामिनारायण ने अद्‌भुत आशीर्वाद दिए हैं। निर्दोषबुद्धि के तीन वचनामृत हैं – मध्य 13, लोया 18 , पंचाला 7, जन्म-कर्म च मे दिव्यं... ये वचनामृत पढ़ कर मेरी आंख में आसूं आ गए...*

ऐसे शिविरों से शरणागति बढ़ती है और फिर प्रभु से संबंध बढ़ता जाए... संतों को कोई स्वार्थ नहीं होता। *आप सब यहां आए हो, तो साहेब के साथ प्रीति बढ़ाना...*

केक के प्रसाद एवं उत्साहभरे जयघोष के नाद से महोत्सव की पूर्णाहुति करके सभी ने महाप्रसाद लिया। जैसा कि महोत्सव के दौरान **प.पू. गुरुजी** ने अपने वक्तव्य में कहा – '*न भूतो, न भविष्यति...*' यूं अविस्मरणीय स्मृति संजो कर सभी ने प्रस्थान किया !

सायं प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई और प.पू. वशीभाई के साथ, प.पू. स्वामिजी के दर्शन हेतु उनके उतारे-मुकाम पर गए। वहां से पू. अमितभाई शाह के घर पधरामनी के लिए गए। प.पू. गुरुजी ने **पू. निष्कामजीवनस्वामिजी** (सांकरदा के गुरुजी) या **पू. आचार्यस्वामिजी** को अमेरिका के इस पूरे ट्रिप में सफ़र के दौरान अपनी गाड़ी में ही लिए।

और... **13 जून** की सुबह साथ गए मुक्तों को स्मृतियाँ देने के लिए 'मीशिगन लेक', 'मिलेनियम पार्क' एवं 'स्काई डॅस्क' देखने के बाद प.पू. गुरुजी **पू. डॉ. सपन** के घर गए। सायं मीशिगन लेक में 'आर्किटेक्चर क्रूज़' में घूम कर शिकागो की ऊंची इमारतें निहारीं।

अगले दिन से अमेरिका के अन्य शहरों में प.पू. काकाजी के प्रासादिक स्थलों का दर्शन करने जाने का कार्यक्रम था। सो, **14 जून** की सुबह होटल से चॅक आउट करके डॅस्पलेन्स मंदिर के दर्शन एवं **पू. पंकजभाई** के घर पधरामनी करके वॉकिगन – **प.पू. दिनकरभाई के घर**, जहां ब्रह्मस्वरूप काकाजी ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति स्वयं स्थापित की थी – उस **'तीर्थधाम'** का दर्शन करने गए। वहां से **'सेन्ट लूईस'** के लिए रवाना हुए। अत्यंत हर्ष की बात थी कि **पूरे ट्रिप में प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. वशीभाई प.पू. गुरुजी के साथ आए।** अमेरिका ट्रिप के लिए रवानगी से पहले, दिल्ली से पू. राकेशभाई जब पू. पंकजभाई से प.पू. गुरुजी के लिए गाड़ी व ड्राईवर की व्यवस्था की बात कर रहे थे, तब खूब सहजता से प.पू. दिनकरभाई ने कहलवाया कि – *मैं भी ड्राईविंग जानता हूँ, तो गुरुजी की गाड़ी मैं ड्राईव कर लूंगा।* यूं प.पू. दिनकरभाई ने करीब डेढ़ घंटा खुद प.पू. गुरुजी की गाड़ी चला कर सेवकभाव का दर्शन कराया और प.पू. गुरुजी को एवं हमें माहात्म्यसभर स्मृति दी। रास्ते में भोजन करके रात को दस बजे सब सेन्ट लूईस के 'हॉथरोन स्वीट्स' में जाकर ठहरे।

15 जून की सुबह 'कोलंबिया बॉटम कन्ज़र्वेटिव एरिया विज़िटर्स सेन्टर' गए – जहां तीन नदियाँ **'मीसीसिपी, मिसूरी एवं इलीनॉय'** एक साथ मिलती हैं। यहां ब्रह्मस्वरूप काकाजी एक बार आए थे और

बाद में प.पू. दिनकरभाई ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी, पप्पाजी एवं बा की अस्थियों को यहीं विसर्जित किया था। धुन करने के बाद प.पू. दिनकरभाई ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी की स्मृतियाँ बताईं। यहां से निकल कर रास्ते में भोजन करने के बाद सब अपने मुकाम पर लौटे।

16 जून की सुबह सात बजे एयरपोर्ट के लिए निकल कर साउथवेस्ट एयरलाइन्स की फ्लाईट से शिकागो के लिए रवाना हुए। शिकागो एयरपोर्ट पर करीब डेढ़ घंटा बैठ कर, दोपहर एक बजे दूसरी फ्लाईट से निकल कर बफ़ेलो पहुँचे। दरअसल, ब्रह्मस्वरूप काकाजी नायगरा फॉल्स देखने कनाडा साईड से गए थे, सो प.पू. गुरुजी की इच्छा थी कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी के उस प्रसादी स्थल का दर्शन करने जाएं। अतः इमिग्रेशन कराने के बाद कनाडा साईड नायगरा फॉल्सव्यू 'एम्बेसी स्वीट्स' हॉटल में जाकर सभी ठहरे।

17 जून की सुबह 'जर्नी बिहाईन्ड धी फॉल्स' के ज़रिए नज़दीक से नायगरा फॉल देखने के बाद, बाहर लॉन में बैठ कर ब्रह्मस्वरूप काकाजी की प्रासादिक भूमि पर उनकी स्मृति करते हुए धुन की। **प.पू. दिनकरभाई** ने बताया कि ***काकाजी*** *यहां आते थे, तो इधर रेलिंग के पास खड़े रह कर कहते –* ***कितना अस्खलित प्रवाह है। इससे अनंत गुणा योगीजी महाराज की कृपा का धोध हम पर बहता है।***

यह सुनते ही **गद्गद्** होते **प.पू. गुरुजी** ने कहा – *फॉल्स के पास मैं भी लगातार यही सोच रहा था। एक बार बापा के पास कुदरत के करिश्मे की कुछ बात चल रही थी। तब* ***बापा*** *ने कहा था –* ***कुदरत का जादू हमें अचंभे में डाल देता है, पर महाराज का करिश्मा कैसा कि 'गुणातीत' द्वारा मानवस्वरूप में भगवान का प्राकट्य अखंड रख दिया ! और... हमें इनकी ऐसी अस्खलित कृपा में आने का मौका मिला !!***

यहां से 'स्काईलॉन टॉवर' जाकर 158 मीटर की ऊंचाई से नायगरा फॉल्स एवं आस-पास का व्यू देखा। दोपहर बाद 'हॉर्नब्लोअर क्रूज़' द्वारा करीब से नायगरा फॉल्स की बौछारों में प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई व प.पू. वशीभाई का दिव्य सान्निध्य पाया। बातों-बातों में पता चला कि प.पू. वशीभाई पहले भी कनाडा तो आए थे, लेकिन 'क्रूज़' में पहली बार बैठे। यहां से हॉटल लौटे। सायं पू. राकेशभाई शाह का भतीजा पू. मिलिंदभाई पटेल एवं अमदावाद के पू. उदयभाई जानी के मित्र पू. हेमंतभाई शाह दर्शन हेतु आए। पू. हेमंतभाई की पत्नी सौ. अल्का भाभी खूब भावना से नाश्ता बना कर ले आई थीं। देर रात को धुन करवा कर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रसंग बताते हुए **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया –

...जनरली लोगों के मन में ऐसा कि संतों से मिलेंगे, तो उनकी बातें सुनेंगे, सत्संग करेंगे। पर, गुणातीतानंदस्वामिजी ने इस बात को एक ओर रख कर कह दिया – भगवान के भक्तों में ***'आत्मबुद्धि और प्रीति' यही 'सत्संग' है।*** *'यह भी सत्संग' - ऐसा नहीं कहा, 'यही सत्संग है' – ऐसा कहा। इसका अर्थ यह हुआ है कि इतर सब सत्संग नहीं कहा जाए। गुणातीतानंदस्वामी की यह बात टिपीकल हैं। स्वामी ने मंदिर और सत्संग का व्यवहार भी इसी तरह रखा था... राकेशभाई या उदयभाई के संबंध से आप हमें मिलने के लिए आए। आपको हमारा सॅटअप देख कर दिल्ली के कुटुंबभाव के सत्संग का ख्याल तो आ गया होगा। ऐसा ही सत्संग यहां दिनकरभाई कराते हैं। इसका कारण यह है कि* ***मेरे, दिनकरभाई के और वशीभाई के***

गुरु एक हैं–काकाजी ! इन्होंने कुटुंबभाव का सत्संग प्रचलित किया। *यह नई बात नहीं है। भगवान स्वामिनारायण तो ढाई सौ साल पहले कह गए–ऐसे सत्संगी वैष्णव ही हमारे सगे-संबंधी हैं। वही हमारी बिरादरी है और उन्हीं के साथ ही हमें सदैव रहना है।* ***आप आज़मा कर देखना–हमारे राकेशभाई का रॅफरन्स देकर आधी रात को भी फोन करोगे, तो यहां दिनकर अंकल आपकी समस्या अपनी समझेंगे।*** *दूसरी बात* ***काकाजी*** *बोले थे–****विदेश के लिए बापु और दिनकरभाई को मैंने रखा है। तो, काकाजी के वचन से ये यहां हमारे गुणातीत समाज के मुखिया हैं।*** *उनके साथ संबंध संभाले रखना। सुबह वे तो फोन पर सत्संग की सभा भी करते हैं। इन्हें क्या कोई काम नहीं होगा ? मुझे खूब खुशी है कि जब तक हम भारत लौटेंगे, ये हमारे साथ ही हैं... फोन द्वारा इनसे संपर्क रखना। कितना फ़ायदा होगा–रोज़ सत्संग की बातें सुनने को मिलेंगी...*

प.पू. वशीभाई ने भी आशीर्वाद देते हुए कहा– *गुरुजी के साथ बहुत मज़ा आता है। सांख्य और योग दोनों सिद्ध होते हैं। समय कहां जाता है पता ही नहीं चलता और धुन कॉन्सटन्ट होती है... मुंबई के* ***रमेशभाई त्रिवेदी*** *कह रहे थे कि* ***दुनिया में ऐसा कौन-सा साधु होगा जो ऐसा आनंद कराए और साथ-साथ सत्संग कराए...*** *अपने सत्संग की दिल को छूने वाली प्रॅक्टिकल बात यह है कि ऐसे संत द्वारा प्रभु प्रगट हैं। वो बहुत अलग बात है... उनके साथ ऐसा संबंध हो जाए... जैसे कि गुरुजी ने कहा तो* ***दिनकरभाई में इतनी पॅशन्स है कि नतमस्तक हो जाते हैं...*** *आज उन्हें प्रार्थना करनी है कि जल्दी से जल्दी काकाजी और आपका करण बन कर हम काम करें...*

18 जून की सुबह कनाडा से बॅफलो एयरपोर्ट गए और साउथवेस्ट एयरलाईन्स से बाल्टीमोर के लिए रवाना हुए। बाल्टीमोर एयरपोर्ट से एक घंटे की दूरी पर **प.भ. अश्विनी शर्माजी** के घर वर्जीनीया गए। उनकी धर्मपत्नी **सौ. सुदेश दीदी** पंजाब के 'सवद्दी कलां' गांव के अक्षरनिवासी प.भ. धर्मपालजी की सुपुत्री **ब्रह्मस्वरूप काकाजी की खूब कृपापात्र !** प.पू. गुरुजी के आगमन से उसकी खुशी का ठिकाना ही न था। उसे कल्पना भी न थी कि प.पू. गुरुजी कभी अमेरिका आकर उसका घर पावन करने आएंगे। करीब डेढ़ घंटे उसके यहां बैठ कर, धुन-भजन करके और आशीर्वाद देकर पंद्रह मिनिट की दूरी पर हॉटल 'हयात् हाउस' जाकर प.पू. गुरुजी ठहरे। अन्य सभी मुक्त भी बॅफेलो से दो बसों द्वारा बाय रोड दस घंटे की दूरी तय करके रात को हॉटल पहुँचे।

19 जून की सुबह चालीस मिनिट की दूरी पर वॉशिंगटन डी.सी. गए। एक हर्ष की बात और माहात्म्य का दर्शन था कि शिकागो से फ्लाईट द्वारा **पू. डॉ. सपन, पू. पिन्टु, पू. सुहृद्, पू. जेसन एवं पू. डॉ. रचना प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. गुरुजी व प.पू. वशी अंकल के दर्शन हेतु सिर्फ चार-पांच घंटों के लिए फ्लाईट से वॉशिंगटन आए।** वॉशिंगटन में 'स्मिथसोनीन एयर एण्ड स्पेस म्यूज़ीयम' व 'स्मिथसोनीन म्यूज़ीयम ऑफ नॅचरल हिस्ट्री' देख कर सभी इंडियन रेस्तरां में भोजन करने गए। आज **'फाधर्स डे'** था, सो प.पू. गुरुजी ने उपस्थित सभी संतों-भाइयों को हलवे का प्रसाद अपने हाथ से खिलाया। भोजन के बाद 'युनाइटेड स्टेट्स कॅपिटल', 'व्हाईट हाउस' व 'लिंकन मॅमोरियल' देखते हुए सब हॉटल लौटे।

20 जून की सुबह हॉटल से चॅक आउट करके पॅन्सिलवेनिया में 'हरशेस चॉकलेट वर्ल्ड' गए। वहां चॉकलेट बनती देखने के बाद, जल्दी ही प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. दीदी के साथ कुछ मुक्त संत भगवंत साहेबजी के **'एलन टाऊन मंदिर'** के लिए रवाना हुए, क्योंकि–**संत भगवंत साहेबजी** साथ में भोजन करने के लिए राह देख रहे थे। एक-दूजे का आपस में कैसा माहात्म्य होना चाहिए, वो हमें मिले स्वरूप यूं दर्शाते हैं। एक दिन पहले तक तो संत भगवंत साहेबजी 'एट्लांटा' थे। लेकिन, प.पू. गुरुजी पहली बार वहां आ रहे थे, सो प.पू. गुरुजी के खूब मना करने पर भी अपना सारा प्रोग्राम केन्सल करके 19 की देर रात की फ्लाईट से वे एलन टाऊन पहुँच गए। इतना ही नहीं, **तबियत नादुरस्त होते हुए भी उन्होंने सुबह उठते ही रसोई में जाकर चैक कर लिया कि प.पू. गुरुजी और मंडल के पसंदीदा व्यंजन बने हैं ? इनके ऐसे वर्तन से तो सेवकों में आपसी आत्मीयता नैसर्गिक रूप से डॅवलप होती है।** श्री ठाकुरजी के हॉल में हार अर्पण करके स्वागत किया गया और भोजन करने गए। भोजन करने के बाद करीब साढ़े तीन बजे तक वहीं बैठ कर आपस में गोष्ठि करते रहे। सायं दिल्ली से गए अन्य मुक्त बसों द्वारा पहुँचे। सभी के लिए चाय-कॉफी की अच्छी व्यवस्था की हुई थी। यहां पहुँचते ही सभी के हृदयोद्गार थे–***शिकागो में जब तक थे तब तक वहां और उसके बाद आज यहां हमें दिल्ली मंदिर-घर का एहसास हो रहा है।*** देखा जाए तो हर जगह हॉटल्स की बहुत अच्छी सुविधा थी, लेकिन ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. कांतिकाका के परिवार ने ताड़देव से जिस अपनेपन से गुणातीत समाज की रचना की है, उसी का हम यह फल चख रहे हैं। दरअसल, **प.पू. गुरुजी के ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी के शताब्दी महोत्सव पर आने से संत भगवंत साहेबजी उन पर जो अत्यधिक प्रसन्न हुए, उसी की यह प्रतिध्वनि थी; जो प.पू. गुरुजी एवं उपस्थित सभी को सुनाई दी।**

सायं मंदिर के हॉल में सभा का आयोजन था। भजन के बाद **संत भगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद दिया–
...आप सब भाग्यशाली लोग हैं। गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में लिखा है–

देश-देशांतर बहुत फिरे, मनुष का बहुत सुकाल; जाकु देखे छाती ठरे, वाका पड़ा दुकाल...

ऐसे संत के साथ आप विदेश में घूम रहे हो, तो आप कितने भाग्यशाली हैं, आपकी यह यात्रा 'तीर्थयात्रा' बन गई! *शास्त्रों में दो प्रकार के तीर्थों का वर्णन है–स्थावर और जंगम। छपैया, वृंदावन, हरिद्वार, धारी, गोंडल जाते हैं, तो वह* ***'स्थावर तीर्थ'*** *कहा जाए, वहां हमें खुद जाना पड़ता है। पर,* ***सत्पुरुष–जिनके द्वारा प्रभु प्रगट हैं, ऐसे संत 'जंगम तीर्थ' हैं। ऐसे जंगम तीर्थ के साथ जो यात्रा होती है, उसे भी 'तीर्थयात्रा' कहा जाता है। आप सब तीर्थयात्री बन गए।*** *अमेरिका आए, लेकिन गुरुजी के साथ आए। जो-जो इस यात्रा में जुड़े हैं, वे तो सच में बहुत पुण्यशाली कहे जाएं। फिर* ***दोबारा भले अमेरिका आओ, लेकिन गुरुजी के साथ जो मज़ा आया वो फिर नहीं आएगा।*** *देखने को अच्छा मिलेगा, लेकिन* ***अब गुरुजी की स्मृति बनी रहेगी कि गुरुजी यहां बैठे थे, यहां ये बात की-दर्शन दिया। यह हमें ध्यान करने के लिए बहुत बड़ा पुण्य बन गया...*** *2003 में इस मंदिर की प्रतिष्ठा हुई।*

बहुत खुशी हुई कि गुरुजी यहां आए। कई बार गुरुजी से कहा, पर ***गुरुजी हैं कि भारत से बाहर निकलने को राज़ी ही नहीं।*** *लेकिन काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी के निमित्त वे आए; सच दिनकरभाई ने बहुत अच्छा काम किया...*

यहां सात संत रहते हैं, शनिवार को सभा होती है। सोमवार से शुक्रवार–हर रोज़ फोन पर धुन और सभा होती है। सब कॉन्फरन्स लाइन से जुड़ जाते हैं। ***फोन द्वारा एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होते हैं। इससे माहात्म्य बढ़ता रहा है और अपनापन-कुटुंबभाव बढ़ता गया है। योगीजी महाराज कहते थे कि कथावार्ता का जिसे इश्क होता है, उसकी आध्यात्मिक प्रगति खूब होती है।*** *कथावार्ता से प्रभु, संत और भक्त का माहात्म्य बढ़ता है। माहात्म्य बढ़ने से निर्दोषभाव और सुहृद्‌भाव बढ़ता है। तो, जैसा कि स्वामिजी ने बताया – इससे हठ, मान, ईर्ष्या अपने आप कम होने लगते हैं...*

अमेरिका देश देखने लायक है... इतना डिसीप्लीन्ड, इतना अच्छा देश बनाया है... वॉशिंग्टन, नायगरा *वगैरह देखें तो वहां बैठे रहने का मन होता है।* ***ईस्ट और वैस्ट, सायन्स और आध्यात्मिकता का समन्वय करने का मौका ऐसे संत के सान्निध्य में मिला है। डिसीप्लीन वैस्ट जैसी और आध्यात्मिकता अपने जैसी – दोनों को एक करें, तो वही अक्षरधाम!***

फिर से कहता हूँ कि गुरुजी के साथ आप आए हो, तो आप बहुत पुण्यशाली आत्मा हैं... आपकी यात्रा 'तीर्थयात्रा' बन गई! *गुरुजी और आप सबका स्वागत करके मुझे बहुत खुशी हुई...*

तत्पश्चात्, अनुपम परिवार की ओर से पू. मिनेषभाई ने संत भगवंत साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी का पूजन किया। पू. विष्णुभाई ने प.पू. गुरुजी को खेस अर्पण किया, संत भगवंत साहेबजी ने शाल ओढ़ाई व पू. राजाभाई ने हार अर्पण किया। इसी प्रकार पू. मिनेषभाई ने प.पू. दिनकरभाई का पूजन किया और पू. जयेन्द्रभाई ने हार अर्पण किया। अन्य संतों-मुक्तों का पुष्प से स्वागत किया गया। दूसरी ओर – **प.पू. दीदी** को हार अर्पण करके एवं अन्य बहनों का भी पुष्प से स्वागत किया गया। **पू. राकेशभाई ने 2017 में 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के साथ प.पू. गुरुजी के 80वाँ प्राकट्य दिन मनाए जाने के अवसर पर दिल्ली मंडल की ओर से सबको दिल्ली आने के लिए आमंत्रित किया।**

तदोपरांत **प.पू. गुरुजी** ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी - पप्पाजी के स्मृति प्रसंग दोहराते हुए आशीर्वाद दिया –

...हमारे सारे समाज की विशेषता यह है कि ***बापा ने हमें ऐसे पुरुषों का जोग दिया और हमारा उनसे लगाव करवा कर यह पक्का करा दिया कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामी, साहेब मेरे हैं और हम इनके हैं।*** *यह बहुत बड़ी बात बनी है। धार्मिक उत्सवों में लोग इकट्ठे होते हैं, जगराते - यज्ञ इत्यादि करते हैं और जनरली उसे लोग 'सत्संग' मानते हैं। पर, गुणातीतानंदस्वामी ने सत्संग की पूरी व्याख्या बदल दी। भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि – यही सत्संग है। कल कनाडा में भी मैंने बात की थी कि ऐसा नहीं कहा कि यह वन काइन्ड ऑफ सत्संग है, वरन् यह कह दिया कि इसे ही सत्संग कहा जाए। बाकी जो चलते हैं – ठीक है, वो इस रास्ते पर जाने के लिए कदम हैं। ऐसा करते-करते काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब जैसों के जोग में आ जाएंगे। उन्हें वे ही लगाव करा देंगे...*

*यहां के लिए निकला, तो फोन पर मैंने **साहेब** से कहा कि आपकी आवाज़ रुंधी हुई लग रही है। उन्होंने बताया कि शिकागो से निकला तब से सर्दी पीछा नहीं छोड़ती। फिर भी उन्हें ऐसा कि गुरुजी पहली बार आ रहे हैं... मैंने उनसे कहा भी कि आप भागदौड़ नहीं करना, वहां हर्षदभाई वगैरह तो हैं ही और हम तो दर्शन करके-प्रसाद लेकर निकल जाएंगे। लेकिन, **इतने थके और जुकाम होने के बावजूद आना – यह अपनेपन की भावना है।***

ये दिनकरभाई, उन्होंने मुझसे कह दिया था – 'जब तक आप अमेरिका में हैं, मैं आपके साथ हूँ।' वर्ना हमें गाईड करने के लिए किसी को डॅप्यूट भी कर सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं किया। जैसे शादी वगैरह में बिरादरी के या एक परिवार के सभी इकट्ठे होते हैं या कोई आता है, तो उसके साथ ही रहना – ऐसी कुटुंबभावना, आत्मबुद्धि और प्रीति का दर्शन अपने समाज में ही हो सकता है। और... काकाजी-पप्पाजी इसकी नींव के पुरुष।

*दूसरी ओर **साहेब की कैसी विशेषता!** सभी ने नोट किया होगा कि अभी जब मैं ठाकुरजी के दर्शन कर रहा था, तब साहेब मेरे साथ थोड़ी बात कर रहे थे। मुझे भी खूब अचंभा हुआ। शिकागो में साहेब के साथ कुछ बातचीत हुई, तो मैंने कहा था कि हमने अपने सब केन्द्रों में ऐसा रखा हो तो...। सो, मुझे बता रहे थे कि हम इस प्रकार सॅट करें। तब ऐसा फ़ील होता है कि **हमारी छोटी-सी बात पर भी, वे कितना ग़ौर करते हैं।** पर, **यह एक आपसी संबंध है और वो संबंध केवल बोलने में नहीं...** महिमा की बात अलग है, महिमा है तो हम सत्संग में टिक गए हैं और इसी से हमारा विकास है। स्वामी ने अपनी बात में कहा भी है कि जीव की वृद्धि का यह साधन है।*

यह जो दर्शन होता है या भावना प्रगटती है यही सच में 'सत्संग' है। साहेब कहते हैं कि हम खूब नसीबदार हैं; नसीबदार इस प्रकार कि यह महिमा की घुट्टी हमें पिला दी। हमारा फर्ज़ है कि उनकी हरेक बात हम समझ सकें... हमारे तंत्र को हम जितना जानते हैं, उससे अधिक ये पुरुष जानते हैं... तो उनकी बातों का स्वीकार करके समझते हो जाएं – ऐसे साहेब सबको आशीर्वाद दें।

प.पू. दिनकरभाई को पू. हेमंतभाई मर्चंट से समाचार मिला था कि **प.पू. कोठारीस्वामिजी** (हरिधाम) की तबियत ज़्यादा खराब होने के कारण उन्हें वडोदरा के अस्पताल में एड्मिट किया है और **पू. अर्जुनभाई (अनुपम मिशन)** जो ड्राईविंग की सेवा करते हैं, उन्हें पॅरेलिसिस हुआ है। सो, उन **की तबियत के लिए प.पू. दिनकरभाई ने धुन कराई।**

अंत में प.पू. गुरुजी, पू. निष्कामजीवनस्वामिजी, पू. आचार्यस्वामिजी एवं पू. सुहृद्स्वामी ने श्री ठाकुरजी की आरती की। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया। प्रसाद तो मानो अन्नकूट कर दिया हो, इतने व्यंजन बनाए थे और सेवक भी खूब प्रेम से सभी को परोस रहे थे! मंदिर से विदा होते समय संत भगवंत साहेबजी छोड़ने के लिए बाहर आए, तो अमदावाद के पू. समीरभाई एवं मुंबई के सेठ पू. अनिल मासा ने सभी को साथ लेकर, गरबा किया... यूं एलनटाऊन की भावभरी स्मृतियाँ दिल में भरकर न्यू जर्सी गए। वहां प.पू. गुरुजी, संत, कुछ सेवक एवं प.पू. दीदी के साथ कुछ बहनें **पू. सुनीलभाई शाह** के यहां एक रात ठहरे। पू.

BJSM-2017 125 80 50 DELHI

सुनीलभाई शाह एवं उनकी धर्मपत्नी **सौ. दीप्ति भाभी** अपने दिल्ली निवास दौरान, करीब बीस साल से, सौ. मीना भाभी व सौ. शोभना भाभी के जरिये प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी से खूब घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। तकरीबन रोज़ ही मंदिर आते। चार साल पहले वे अमेरिका शिफ्ट हुए, तो **अंतर में प.पू. गुरुजी एवं सत्संग के वियोग की व्याकुलता थी** और वे बार-बार प.पू. गुरुजी को आने के लिए आग्रह करते थे। सो, आज **प.पू. गुरुजी के आगमन से उनका दिल बेकाबू था, खुशी समाती न थी।** अन्य सभी मुक्त हॉटल 'हॉली डे इन एक्सप्रेस' में जाकर ठहरे।

21 जून की सुबह पू. सुनीलभाई के घर नाश्ता करने के बाद प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. दीदी एवं कुछ मुक्त पू. सुनीलभाई से परिचित दो परिवारों के यहां पधरामनी करने गए। दोपहर को दिल्ली के पुराने जोगी अक्षरनिवासी पू. जग्गु सेठ, जिनका एक पुत्र दिल्ली मंदिर में साधु (पू. संकल्पस्वामी) है और दो पुत्रियाँ (पू. स्मिता दीदी व पू. नित्या) अक्षरज्योति में रह कर भगवान भजती हैं, उनके धेवते **पू. संजय शर्मा** के घर गए। वहां दोपहर का प्रसाद लेकर एक घंटे की दूरी पर रहते, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के खूब निजी भक्त, पू. भरतभाई धंधुकिया के यहां पधरामनी करने गए। **पू. भरतभाई एवं उनकी पत्नी सौ. आशा भाभी ने ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी के प्रति उन्हें जैसा भाव है, वैसे ही भाव से प.पू. गुरुजी की आवभगत की।** यहां से एक घंटे की दूरी पर पू. चैतन्यभाई महेता के घर जाने का शॅड्यूल था, लेकिन प.पू. गुरुजी की तबियत व थकान का एहसास करते हुए **पू. चैतन्यभाई** ने फोन पर प.पू. गुरुजी से कहा कि उनका परिवार ही दर्शन करने हॉटल आ जाएगा। राज़ी होकर प.पू. गुरुजी के मुख से सहज ही 'धन्यवाद' शब्द फिसल गया। और... वाकई, नाश्ता इत्यादि लेकर सायं वे सपरिवार हॉटल आ गए थे। देर रात तक वहां के कई मुक्त भी दर्शन करने आते रहे...

22 जून की सुबह **न्यू यॉर्क** के लिए रवाना हुए। जब से प.पू. कोठारीस्वामिजी की अत्यधिक नासाज़ तबियत का समाचार मिला, तब से प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. वशीभाई उनकी फ़िक्र में दिख रहे थे। सो, लिबर्टी स्टेट पार्क से 'स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी' देखने जाने के लिए जब फेरी के ऊपरी हिस्से पर बैठे, तो खूब तेज़ धूप होने के बावजूद भी **प.पू. गुरुजी ने करीब बीस मिनिट प.पू. कोठारीस्वामिजी की तबियत के लिए धुन कराई।** वहां से लौट कर दोपहर का भोजन करने के बाद प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. दीदी एवं कुछ मुक्त न्यू यॉर्क में **ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रसादी के 'लेकव्यू हॉटल'** गए। सालों पहले **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** वहां कमरा **नंबर 152** में ठहरे थे, **तीर्थरूप उस प्रासादिक कमरे का** सभी ने दर्शन किया। इस हॉटल में थोड़ी देर आराम करके सायं, मुक्तों को स्मृति देने के लिए, 'डबल डॅकर नाईट टूर ऑफ मॅनहॅटन' के लिए निकले। एक घंटा न्यू यॉर्क सिटी की जगमगाहट देखकर देर रात को न्यू जर्सी हॉटल लौटे।

23 जून की सुबह न्यूजर्सी-रॉबिन्स्विल स्थित **बॅप्स** के **मंदिर** का दर्शन करने के लिए गए। यहां से पू. सुनीलभाई शाह के घर भोजन करने गए। प.पू. कोठारीस्वामिजी की बिगड़ती तबियत से चिंतित होकर प.पू.

हरिप्रसादस्वामिजी अमेरिका से भारत लौट रहे थे और प.पू. गुरुजी के पूछने पर उन्होंने कहा कि तू भी जल्दी निकल जा और वडोदरा पहुँच। सो, जैसे कि 25 की दोपहर को सब दिल्ली पहुँचने वाले थे, तो यहां बैठे-बैठे प.पू. गुरुजी ने 25 की सायं वडोदरा जाने की कनेक्टींग फ्लाईट की टिकिट बुक करा ली। भोजन करके हॉटल लौटे और सायं डेढ़ घंटे की दूरी पर **परसीपॅनी** में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की प्रेरणा से बन रहे **मंदिर के प्लॉट पर पुष्पांजलि करने गए**। प.पू. दिनकरभाई के भाई **पू. रजनीभाई** के घर पधरामनी करके-**पू. ललितकाका** के घर प्रसाद लेकर न्यू जर्सी हॉटल लौटे।

प.पू. गुरुजी का अमेरिका आने का कार्यक्रम बन रहा है, यह जान कर दिल्ली के **पू. भद्रायुभाई जानी** के अमेरिका में रहते बड़े सुपुत्र **पू. आशिष** के अंतर में तीव्र भावना थी कि प.पू. गुरुजी की गाड़ी पर ड्राईविंग की सेवा मुझे करनी है। तो, जब से प.पू. गुरुजी शिकागो पहुँचे, तब से सत्रह दिन की छुट्टी लेकर न्यू यॉर्क एयरपोर्ट छोड़ने तक वह ड्राईविंग की सेवा पर रहा। **उसने ऐसी सेवा की कि प.पू. गुरुजी को गाड़ी में सेवक की भी ज़रुरत नहीं लगी – ऐसी निश्चिंतता दी। सो, प्रसन्न होकर अंतिम दिन प.पू. गुरुजी ने अपने गले से कंठी निकाल कर उसे पहनाई।**

इसी प्रकार, प.पू. दिनकरभाई की आज्ञा से शिकागो के **पू. जीतूभाई जोशी** अपनी गाड़ी लेकर एवं **पू. किरण बहन** भी आख़िर तक प.पू. दीदी की गाड़ी की सेवा में तत्पर रहीं। **इन तीनों मुक्तों की भक्ति के प्रति अंतर से नमन हो रहा था, क्योंकि इतने बड़े देश में इन्होंने लगातार आठ-आठ, बारह-बारह घंटे की ड्राईविंग की थी।**

24 जून की सुबह चॅक आउट करके सुबह साढ़े नौ बजे ज्हॉन एफ. कॅनेडी इन्टर्नैशनल एयरपोर्ट-न्यू यॉर्क के लिए रवाना हुए। **प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई भी एयरपोर्ट आए और जब तक सबका चॅक इन पूरा नहीं हो गया, तब तक वहीं खड़े रह कर सबको दर्शन देते रहे।** दोपहर तीन बजे AI 102 फ्लाईट से सभी दिल्ली-भारत के लिए रवाना हुए। फ्लाईट में बैठने के बाद **प.पू. गुरुजी तो सीट के सामने लगी स्क्रीन पर एयर रूट का मानचित्र ही लगातार देखते रहते थे,** यह जानने के लिए कि कितना रास्ता पार हुआ और भारत कितनी दूर है ? और... तेरह घंटे की ऐसी बेसबरी के इंतज़ार के बाद फ्लाईट की खिड़की से दिल्ली देखते ही प.पू. गुरुजी की आंखें गिली हो गईं और **'मादरे वतन'** (मातृभूमि) के लिए इनके मुँह से हृदयोद्‌गार फिसल गए –

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा... हमारा...

अचानक यह सुन कर, प.पू. गुरुजी के साथ बैठे **पू. अभिषेक** ने जब अचंभे से प.पू. गुरुजी को देखा, तो **प.पू. गुरुजी** बोले – *यह मैंने सिर्फ बोला नहीं है,* ***आई मीन इट!***

25 जून की दोपहर दो बजे दिल्ली के इंदिरागांधी इन्टर्नैशनल एयरपोर्ट पहुँचे। दिल्ली एयरपोर्ट उतरते ही **पू. प्रेमस्वामिजी** का मॅसेज मिला कि *गुरुजी जैसे ही एयरपोर्ट उतरें, पहले उन्हें फोन कर लें।* सुन कर शंका से **प.पू. गुरुजी** का चेहरा एकदम ही उतर-सा गया, पर जब सुना – *'कोठारीस्वामिजी की तबियत पहले से सुधरी है; सो भागदौड़ करके वे फिलहाल न आएं'* तब जाकर मानो उनकी जान में जान आई ! और... प.पू. गुरुजी मंदिर जाने के लिए निकले।

मंदिर में उपस्थित मुक्तों ने फूलों से सुसज्जा की थी और जैसे कि कहीं भी बाहर जाकर मंदिर लौटते प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं–

अपना देश-अपना देश, अपना गाँव-अपना गाँव, अपने लोग-अपने लोग,

अपना घर-अपना घर, अपना बिस्तर-अपना बिस्तर...

सो, मंदिर में ऐसे स्लोगन्स लगाए हुए थे। सबकी खुशी का ठिकाना नहीं था, क्योंकि मंदिर के प्राण लौट आए थे और आस-पास का माहौल-प्रकृति मानो फिर से सजीव हो गई!

प.पू. दीदी एवं साथ में गए मुक्तों ने अमेरिका में हॉटल्स और भोजन की अच्छी ॲरेन्जमेन्ट्स के लिए **पू. राकेशभाई, पू. पुनीतजी, पू. डॉ. अर्ची, पू. नित्या, पू. बंसरी** की खूब सराहना करते हुए कहा कि *अक्टूबर से इस निमित्त ये सब जो मीटिंग्स किया करते थे, उस सारे भक्तिरूप परिश्रम ने सभी को खूब कम्फर्ट्र्स दी।* यह सुन कर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने तुरंत कहा–

इसीलिए तो जिनके कारण हमें सारी कम्फर्ट्र्स मिली हैं, उनके लिए ख़ास प्राईज़ लाया हूँ। सच, इन लोगों ने मार्वलस काम किया है...

*हर एक हॉटल में वहां के शॅफ को पटा कर **नित्या** ने मेरे, दिनकरभाई, वशी के लिए खुद वहां रोटी बेल कर भिजवाई, यह कोई आसान बात नहीं थी। वशी तो ताज्जुब में थे कि घर जैसी रोटी यहां कैसे आती है... इस हेतु **रॉयल ऑर्चिड के गौरव गर्ग का छुपा सहयोग भी हम भुला नहीं पाएंगे।***

साथ ही **प.पू. गुरुजी** ने एक और निम्न मार्मिक बात की जिसे इस **तीर्थयात्रा की सीख** कहना ही उचित होगा...

देखो, 12 तारीख की दोपहर को फंक्शन खत्म होने के बाद से दिनकरभाई और वशीभाई लगातार हमारे साथ रहे। सिर्फ साथ रहे ऐसा ही नहीं, बल्कि ब्रह्मस्वरूप काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने की भावना से परछाईं की भांति – पूरे ट्रिप में हरदम मेरे पास रहे।

उन्हें शिकागो में क्या कोई काम नहीं होगा ? वाईंड अप करते हुए सेवकों को उनसे कुछ पूछना-करना हो या वशी को ऑफिस का कुछ काम नहीं होगा ? वे कह भी सकते थे कि इतना काम निपटा कर फिर आपको जॉईन करते हैं। यहां ख्याल पड़ता है कि उन्हें प्रवृत्ति का कोई भार-बंधन नहीं, सिर्फ ब्रह्मस्वरूप काकाजी के संबंध की ही प्रायॉरिटी है। साथ ही, वहां सेवक भी ऐसे तैयार हो गए होंगे और उनका उन्हें भरोसा होगा कि वे सब संभाल लेंगे, तब यूं छोड़ कर आ गए।

यहां भी ऐसे सेवक हैं, वर्ना यदि ऐसा स्टाफ न हो तो पंद्रह दिन उनके भरोसे छोड़ कर मैं, सुहृद्स्वामी और दीदी तीनों कैसे जा सकते थे? लेकिन, हम क्रिया में-स्थान में बंध जाते हैं। पर, हमें सिर्फ संत में ही बंधना है – वो दिनकरभाई व वशी ने हूबहू दर्शन कराया, जो कि अनुकरणीय हैं।

हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी सभी मुक्तों के अपने हैं और उन्हें हम सबसे प्रीति है, लेकिन आंतरिक रूप से वे केवल ब्रह्मस्वरूप काकाजी से ही जुड़े हैं। परंतु, ऐसे प्रसंगों पर प्रकाश डाल कर प.पू. गुरुजी हमें एहसास कराते हैं कि भले हम कितने ही बड़े क्यों न हो जाएं-लोग हमें पूजने भी लगें, लेकिन हमें **'दास के**

दास' **का फर्ज़** भूलना नहीं है। **हमें संस्था-समाज से नहीं, बल्कि सिर्फ सत्पुरुष से ही जुड़ना है।**
यूं, अपने 'प्रगट प्रभु' से ऐसा 'संबंध' दृढ़ करके
'ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव–2017' का आगामी चरण
उनके तरीके से दिल्ली में मनाने के लिए हर प्रकार से कटिबद्ध होने की सभी से इच्छा रखते हुए,
'19 जुलाई–गुरुपूर्णिमा' का अवसर मनाया।
एक और बात,
हम सही अर्थ में अपने स्वरूप के हैं या नहीं, वह निम्न प्रसंग से समझ में आया–
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी से जुड़े **'पू. अवस्थी मामा'** की सुपुत्री **कश्यपी दीदी** का करीब तीन साल पहले दिल्ली में ट्रांस्फर हुआ। जिसका बचपन ही सत्संग में बीता हो, उसे तो कहीं भी जाकर सत्संग की तड़प तो रहेगी ही। सो, कश्यपी दीदी शनिवार की हर सत्संग सभा और उत्सवों में दिल्ली मंदिर रैग्युलर आती हैं। इतना ही नहीं, **हर सेवा में भी एक अपनेपन से ओतप्रोत होती हैं।**
बेशक–**प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के लिए तो कोई भी किसी भी सेन्टर से आए, उसका संबंध देख कर वे उसे अपना ही मानते हैं।**

सो, कश्यपी दीदी अबकी बार शिकागो की तीर्थयात्रा में दिल्ली के मुक्तों के साथ शामिल हुईं। **शिकागो** पहुँच कर पहले ही दिन **'जॅट लेग' वगैरह पर ध्यान न देते हुए, वे पू. किरण बहन के साथ उत्सव की सेवा में पहुँच गईं।** इससे भी अधिक, पूरे सफ़र के दौरान हॉटल में चॅक इन और चॅक आउट के समय मुक्तों के लगेज इत्यादि बस से ट्रांस्फर करने की सेवा में तत्पर रहीं। रेस्तरां इत्यादि में भी बहनों के भोजन का ध्यान रखा।

दिल की सच्चाई से की गई प्रार्थना और सेवा प्रभु को पहुँचती ही है, इसका दर्शन **19 जुलाई–गुरुपूर्णिमा** की सायं हुआ। कश्यपी दीदी गुरुपूजन निमित्त मंदिर आईं, तो **प.पू. गुरुजी** ने सेवक से प.पू. दीदी को कहलवाया–

28 मई को जब शिकागो की ट्रिप ऑर्गेनाइज़ करने वाली टीम को प्राइज़ दिया, तब से मेरे मन में था कि कश्यपी को भी प्राइज़ देना है। वैसे ये टोटली हरिधाम से एटेच्ड है, पर इसने हमें कभी फील नहीं होने दिया कि मैं आपके सेन्टर में नई हूँ। ***काकाजी*** *बोलते थे–****अभेददृष्टि-अविरोधवृत्ति! इसमें वो 'अभेददृष्टि' नज़र आती है।***

बेशक, मैं मानता हूँ कि दीदी का वर्तन भी ऐसा है कि किसी भी सेन्टर से कोई आया हो, वे उसे एक ही भाव से एटेन्ड करती हैं; पर, सामने वाले व्यक्ति का रवैया भी तो ऐसा होना चाहिए। साथ में आए मुक्तों ने मुझे बताया कि जैसे वो शिकागो में सेवा करती थी, वैसे ही परोसने इत्यादि की सेवा इसने एलन टाऊन मंदिर में भी की। यह बहुत बड़ी बात है। वर्ना, किसी दूसरे सेन्टर में जाते हैं तो एक क्षोभ जैसा रहता है। ***ऐसे विरल बहुत कम होते हैं।***

*सो, **इसे 'अभेददृष्टि' से बीहेव करने का प्राईज़ देना है। ये हरिधाम - अनुपम मिशन - गुणातीत ज्योत, ये भक्ति आश्रम - अक्षरज्योति – ऐसा इसे कोई फर्क ही नहीं है।***

***एक्च्युअली ऐसा जो रखे, वो ही सच्चे काकाजी के हैं - वो ही सच्चे स्वामिजी के हैं।** अंदर यदि तनिक भी अलगाव हो कि ये दिल्ली के या ये हरिधाम के, तो तुम जरूर सोचना कि न तुम काकाजी के हो, न ही तुम स्वामिजी के हो; तुम तो बस अपने मन के हो।*

देखा जाए तो **ब्रह्मस्वरूप काकाजी के 'अभेददृष्टि' के सिद्धांत से सभी स्वरुपों के प्रति स्वयं ऐसा वर्त कर प.पू. गुरुजी ने उनकी आंतरिक प्रसन्नता पाई है। सभी स्वरूपों को भी वे अपने लगते हैं। हर एक की आज्ञा-सूचन भी उन्होंने शिरोधार्य किया है, फिर भी भीतर से वे सिर्फ ब्रह्मस्वरुप काकाजी के ही हैं।** इसीलिए वे सहजता से कश्यपी दीदी के भाव को परख गए।

कश्यपी दीदी को प्राईज़ देने के बाद, पवई से **'गुरुपूर्णिमा'** निमित्त प.पू. दिनकरभाई और प.पू. भरतभाई द्वारा भेजे गए निम्न आशीर्वाद पत्र को पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने पढ़ा। आइए, इसका मनन - चिंतन करें और सच्चा पूजन करके, जीव का सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने के लिए आ रहे **'रक्षाबंधन'** को मनाएं...

स्वामिश्रीजी

गुरुपूर्णिमा पर प्रार्थना

'अक्षरधाम' — गुरुपूर्णिमा

पवई, मुंबई — दि. 19 जुलाई, 2016

सदा दिव्य साकार अक्षरधाम के मुक्तों...

गुरुपूर्णिमा के मंगल अवसर पर सभी भक्तों के खूब ही हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण!

भक्तों के हृदय में दो दिन अत्यंत महत्त्वके होते हैं – एक **गुरुपूर्णिमा** और दूसरा **गुरु का प्रागट्य दिन !**

दि. 10, 11, 12 जून, 2016 के मंगल दिनों शिकागो - अमेरिका में **'गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** अद्भुत प्रकार से मनाया गया। सभी के हृदय में उसकी दिव्य स्मृतियाँ चिरंजीव हो गईं। भक्ति और परिश्रम के साथ माहात्म्य का अद्भुत दर्शन हुआ। गुरुहरि काकाजी-गुरुहरि पप्पाजी के माहात्म्य का मानो बिगुल फूंका गया हो, इस प्रकार समग्र गुणातीत समाज एवं अन्य मुक्तों-भक्तों के हृदय में यह माहात्म्य धबकता हो गया और सभी के मुख से 'धन्यवाद' के शब्द फिसल गए।

लेकिन, इस सफलता के साथ ही हम सबकी जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। अपने विचार, वाणी और वर्तन से निजी मुक्तों में आपसी संप, सुहृद्भाव, एकता का दर्शन सहज हो, इस हेतु हमें जाग्रतता रखनी है। यह कौन करेगा? जिसे एकता से जीना हो, उसी के लिए यह बात है। सुप्रसिद्ध गुजराती कवि **वेणीभाई पुरोहित** द्वारा लिखी पंक्ति याद आती है –

'कोई तो जागे, कोई तो जागे... हम में से कोई तो जागे...
सभी सो रहे हो, तो कोई जागे... हम में से कोई तो जागे...
कोई क्या जागे, कोई क्या जागे... ???
तू जागे तो, तू जा आगे...'

आज **गुरुपूर्णिमा** के शुभ अवसर पर गुरुचरणों में अर्ध्य अर्पण करने के लिए निम्न तीन शब्दों का अंतर में बार-बार स्मरण हो आता है –

- **गुरुभक्ति**
- **सच्चा समर्पण**
- **गुरु के साथ दिव्य आध्यात्मिक संबंध**

जिसके अंतर में **'भक्ति'** जाग्रत हो, उसे गुरु की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए 'याहोम' हो जाने की तत्परता हमेशा रहती है। फिर कुछ भी सहना या कसनी उसे लगती नहीं; मन-बुद्धि के मूल्यांकनों से जीना रहता नहीं। शिकायत करने का कोई संकल्प उठता नहीं – जैसे देश भक्त अपने देश के लिए हँसते-हँसते फांसी पर चढ़ जाता है। श्रीजी महाराज से लेकर आज तक के हमारे सभी गुणातीत सत्पुरुषों ने ऐसी गुरुभक्ति का दर्शन कराया है। उनसे मिले अक्षरमुक्तों ने भी ऐसी भक्ति का दर्शन कराया है। तो, आज के मंगल पर्व पर हे गुरुदेव ! हमारे हृदय में आपके प्रति ऐसी गुरुभक्ति सहज और सदैव प्रगटाना और उसमें बाधारूप होते अवरोधों को हम आपके चरणों में रख देते हैं।

दूसरी बात गुरु को समर्पित हुए सभी **'साधकों और भक्तों'** के लिए है। साधकों ने गुरुचरणों में सर्वस्व अर्पण किया है और साधु हुए हैं। संसार तो अब रहा नहीं, देह के सगे-संबंधी अब अपने रहे नहीं, मन-बुद्धि भी गुरुचरणों में अर्पण किया है, फिर भी 'स्व' का भाव रह जाता है। सो, सेवा तो होती है, लेकिन हठ, मान, ईर्ष्या के स्वभाव के वश, भक्तों के प्रति विपरीत भाव आ जाता है। भक्त व साथीगण निर्दोष और दिव्य नहीं माने जाते, उनकी टीका-टिप्पणी कर लेते हैं – वह 'स्व' का भाव है। तो, हे गुरुदेव ! इसे हम आपके चरणों में रख देते हैं, जिससे सच्चे समर्पणभाव से अहोनिश शून्य बन कर रह सकें।

तीसरी बात **'संबंध'** की है। अपने यहां परोक्ष की तो बात है ही नहीं, **'प्रगट प्रभु'** की बात है; उनके प्रत्यक्ष गुणातीत संत के साथ के संबंध की बात है।

- उसमें सबसे पहले **'आसरा'** का संबंध है। *'जिसे जिसका आसरा, उसे उसकी लाज।'*
  घर में रहें तो सर्दी, गर्मी, बरसात से रक्षा होती है, देह का पोषण होता है, निभ जाते हैं – यह घर का आसरा है। इसी प्रकार हम अपनी आदतों के साथ सत्पुरुष के पास भी रहते हैं। **काकाजी** कहते – *'कब तक निभाया ही करें ?'*
- इससे आगे **'आज्ञा'** का संबंध है। जितना कहें, उतना करे। आज्ञापालन हम उनके तरीके से-सुचारु रूप से करें, तो संबंध बढ़ता है। उससे हमारा देहभाव टलता है और हम पर बड़े पुरुष की कृपादृष्टि सहज ही रहती है।
- इससे आगे **'अनुवृत्ति'** का संबंध बढ़ता है। बड़े संत की मरज़ी का ख्याल पड़ जाए, उन्हें जो पसंद है, वैसा ही सहज वर्ता जाए। बड़े पुरुष की आंख के इशारे पर सेवक की देह मुड़े।
- इससे आगे उनका **'अभिप्राय'** समझ कर दिव्य जीवन जीने वाले का संबंध बढ़े। इसमें सुहृद्‌भाव और निर्दोषबुद्धि अंखडित है, मुक्तों का माहात्म्य अखंडित है।

BJSM-2017 125 80 50 DELHI

तो हे गुरुदेव ! हे दयालु ! हमारा आपके साथ दिव्यता–दिव्यता-दिव्यता का, निर्दोषभाव-निर्दोषभाव-निर्दोषभाव का और आपके साथ तादात्म्य का संबंध दृढ़ हो – ऐसे आशिष आज के शुभ-मंगल अवसर पर बरसाना।

इस हेतु हम शताब्दी के पर्व के अंतिम चरण तक –

❖ अपनी देह और घर को मंदिर बनाने का,

❖ दिन में पाँच बार भी **'लॅट गो'** करने का
और

❖ **साथी-मुक्तों में से किसी एक भी मुक्त का 'माहात्म्य प्रसंग' निहार कर, उसे नोट करके, पांच भक्तों के पास उसका गुणगान करने** का संकल्प करते हैं।

हे दयालु ! आपके ही बल से यह संभव है। हमारी जी हज़ूरी से राज़ी होकर, करुणा बरसा कर, हम सभी को अक्षरधाम के सुख-शांति और आनंद में हर पल झूमता कर देना – ऐसी अंतर से प्रार्थना सह...

लि. आपके ही **गुरुजी, दिनकर, बापु, भरत, वशी** के जय स्वामिनारायण !

चातुर्मास के दौरान

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु सभी सत्संगी निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि – **20 जुलाई, बुधवार** से **1 सितंबर, गुरुवार** तक एक बारी भोजन लें।
2. सावन के महीने दौरान मंदिर में टिफिन या कॅश द्वारा एक रसोई की सेवा दें।
2. **15 जुलाई, शुक्रवार** - नियम की एकादशी, **25 अगस्त, गुरुवार** - जन्माष्टमी
13 सितंबर, मंगलवार - जलझीलनी एकादशी, **11 नवंबर, शुक्रवार** - कार्तिक शुक्ला एकादशी
इन चारों दिन व्रत रखें।
3. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति 'महापूजा' करवाएं।
4. रोज़ सुबह या सायं **'स्वामिनारायण महामंत्र'** का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
5. सावन महीने के दौरान –
(अ) **'भगवत् कृपा'** के पिछले अंकों में आई संतों-मुक्तों की ज्ञानवार्ता का क्रमशः नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।
एवं
(ब) 'गुजराती' भाषा जानते हों, वे शिकागो से प्रकाशित **'अस्खलित मंगल कृपाधारा'** एवं **'गुणातीतभाव दर्शन'** का पाठ करें।

❋ विशेष नियम ❋

चातुर्मास दौरान घर के (कुटुंब के) सभी सदस्य सुबह या दोपहर या सायं – जिस समय भी सभी को अनुकूल हो, तब रोज़ इकट्ठे बैठ कर भोजन करें और... भोजन शुरू करने से पहले सभी दो मिनिट 'प्रगट प्रभु' की स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन करें।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 14.8.'16,	रविवार	—	पवित्रा एकादशी – व्रत *(ठाकुरजी को रेशम के हार पहनाने।)*
(2)	दि. 15.8.'16,	सोमवार	—	भारत का स्वातंत्र्य दिन
(3)	**दि.18.8.'16,**	**गुरुवार**	—	**श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन (राखी)** ***(सुबह 9:00 से 11:00 प.पू. गुरुजी से शाश्वत् रक्षाकवच प्राप्त करने के लिए महापूजा-प्रार्थना करेंगे।)***
(4)	दि. 22.8.'16,	सोमवार	—	नागपंचमी
(5)	दि. 23.8.'16,	मंगलवार	—	रांधण छठ (षष्ठी)
(6)	दि. 24.8.'16,	बुधवार	—	शीतला सातम (सप्तमी)
(7)	दि. 25.8.'16,	गुरुवार	—	**जन्माष्टमी** – व्रत
(8)	दि. 28.8.'16,	रविवार	—	एकादशी – व्रत
(9)	दि. **1.9.'16,**	गुरुवार	—	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज का प्राकट्य दिन** श्रावण मास – समाप्त
(10)	दि. 5.9.'16,	सोमवार	—	गणेश चतुर्थी
(11)	दि. 13.9.'16,	मंगलवार	—	जलझीलनी एकादशी – व्रत वामन जयंती
(12)	दि. 15.9.'16,	गुरुवार	—	अनंत चतुर्दशी
(13)	दि. 17.9.'16,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्मृति पर्व
(14)	दि. 19.9.'16,	सोमवार	—	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का स्मृति पर्व
(15)	दि. 25.9.'16,	रविवार	—	भगवान स्वामिनारायण का स्मृति पर्व
(16)	दि. 26.9.'16,	सोमवार	—	एकादशी – व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्मृति पर्व
(17)	दि. 27.9.'16,	मंगलवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्मृति पर्व
(18)	दि. 28.9.'16,	बुधवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एवं अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का स्मृति पर्व

'स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी'

'White House' Awaiting to welcome MA'DAM Pre'sident

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A- 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052